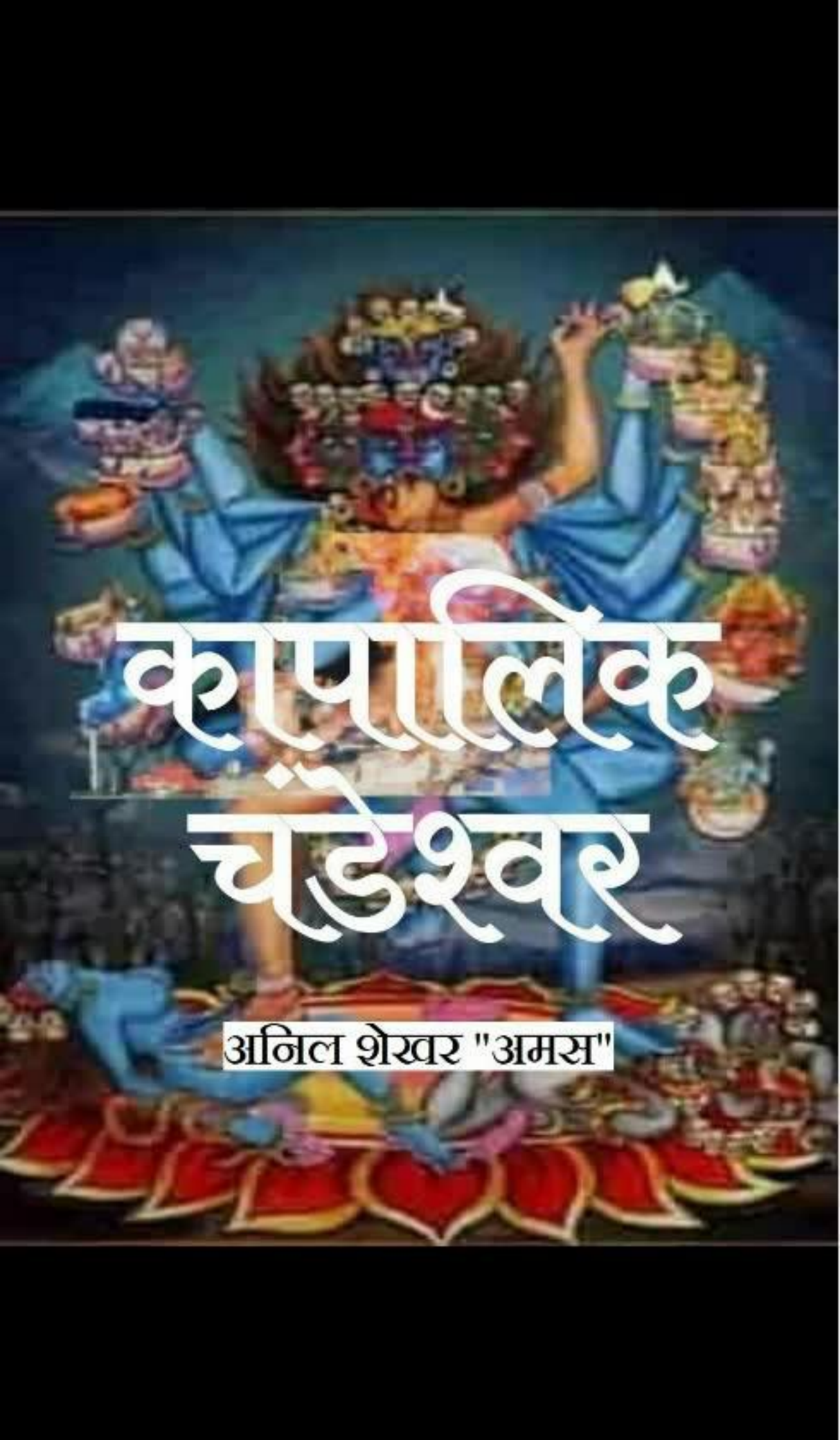




# कापालिक चंडेश्वर

अनिल शेखर "अमर"

## पूर्वपीठिका

# ॥ श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥

सभी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है, उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है , इसलिए इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुकसान हो सकता है ।

## पूर्वपीठिका

# ॥ श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥

सभी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है, उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है , इसलिए इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुकसान हो सकता है ।

अंत में .....यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी  
गयी एक रचना है ....  
उसका आनंद लें ...

अनिल शेखर “अमस”

[anilshekhar.amas@gmail.com](mailto:anilshekhar.amas@gmail.com)



कापालि

क

चण्डेश्वर



यह आज से लगभग 400 वर्ष पहले की एक काल्पनिक कथा है .....

उस समय छोटे-छोटे बहुत सारे राज्य हुआ करते थे ।  
आइए चलते हैं उस समय में.....

गंगा नदी के तट पर बसा हुआ एक राज्य है महेंद्रगढ़ ।  
जिसके वर्तमान राजा हैं राजा वीरेंद्र !

राजा वीरेंद्र लगभग 20 वर्ष की आयु के हैं । गोरे चिट्टे वीरेंद्र तीखे नैन नक्श वाले 6 फुट के युवा है । युवावस्था में ही उनके ऊपर राज्य की जिम्मेदारी आ गई । शिकार पर गए हुए उनके पिता राजा धर्मेन्द्र शेर के हमले में मृत्यु को प्राप्त हो गए थे । जिसके बाद उनका राज्याभिषेक किया गया । अभी उनका विवाह नहीं हुआ है !

राजमाता कामायनी की आयु 40 वर्ष की होगी ।  
वीरेंद्र उनका इकलौता पुत्र है । कामायनी स्वयं एक

विदुषी महिला है और वीरेंद्र को राजकाज चलाने में पूरा सहयोग करती है । जिसके कारण वीरेंद्र आसानी से अपना कार्य कर लेता है ।

उसी राज्य मे गंगा नदी के तट पर एक आश्रम है ।

उस आश्रम में रहते हैं.....

आचार्य विद्यानंद शास्त्री .....

आचार्य की उम्र उस समय कोई 26 या 27 वर्ष की रही होगी ...

विद्यानंद शास्त्री प्रकांड विद्वान हैं और कर्मकांड के विशेषज्ञ !

उन्हे चारों वेद कंठस्थ हैं !

उनका प्रिय विषय है अथर्ववेद.....

वर्तमान में उपलब्ध ग्रंथों में से वेद सबसे पुराने माने जाते हैं । जिनकी रचना के विषय में तथा उनके काल के विषय में कोई स्पष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है लेकिन उसे कई विद्वान कम से कम 4000 साल पुराना मानते हैं।

वेद चार होते हैं

ऋग्वेद

यजुर्वेद

सामवेद और अथर्ववेद ।

इसमे ऋग्वेद सबसे पहला वेद है । ऋग्वेद की ऋचाओं में देवताओं की प्रार्थना, स्तुतियां और देवलोक में उनकी स्थिति का विशेष वर्णन है ।

यजुर्वेद में यज्ञ की विधियां और यज्ञों में प्रयोग किए जाने वाले मंत्र हैं।

सामवेद गीतात्मक यानी गीत के रूप में है। इस वेद को संगीत शास्त्र का मूल माना जाता है।

अथर्ववेद में तंत्र जैसी रहस्यमयी विद्याओं और आयुर्वेद आदि का विवरण है। अथर्ववेद में विभिन्न प्रकार के कर्मकांडों की विस्तृत व्याख्या मौजूद है । उसे समझने के लिए थोड़ी विद्वत्ता और ईश्वरीय कृपा अवश्य चाहिए .....

विद्यानंद सांवले रंग के लगभग साढ़े 5 फीट की ऊंचाई वाले युवा है । प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी है ।

उनकी वाणी में गंभीरता है और उन्हें सुनने वाला मोहित होकर उन्हें सुनता ही रह जाता है ....

कर्मकांडी होने के कारण विभिन्न प्रकार के आयोजनों में उन्हें ससम्मान आमंत्रित किया जाता है । विशेष रूप से राजमहल में होने वाले कार्यक्रमों में उनको अवश्य ही आमंत्रित किया जाता है । साथ ही जब भी किसी प्रकार की गंभीर समस्या आती है तब विचारण के लिए राजा और राज परिवार के द्वारा बुलाए जाने वाले प्रमुख सलाहकार के रूप में उनको भी याद किया जाता है । वह सात्विक विचारधारा से युक्त व्यक्ति हैं और साथ ही किसी की कुटिलता को भाप लेने में उनसे माहिर कोई नहीं है !

आचार्य चाणक्य के जैसी पैनी दृष्टि के स्वामी है विद्यानंद शास्त्री !!

जितना सरल सहज जीवन वे जीते हैं ....

उसे देखते हुए कोई उनके बारे में यह अनुमान नहीं लगा सकता कि उनके अंदर इतनी जबरदस्त कूटनीतिक और राजनीतिक समझ भी है ।

उनकी इस प्रतिभा को राजा वीरेंद्र और राज माता कामायनी अच्छी तरह से जानते हैं । इसलिए राज

परिवार में उनकी गहरी पैठ है । राज महल के दरवाजे उनके लिए 24 घंटे खुले रहते हैं । जब चाहे राजा से मिलने के लिए आ सकते हैं । सभी को सख्त निर्देश है कि विद्यानंद शास्त्री जी के आने पर तुरंत राजा को उसकी सूचना दी जाए । उन्हें राजपरिवार के सदस्य के समान सम्मान दिया जाए ।

विद्यानंद की विदुषी पत्नी है मालिनी । मालिनी सांवले रंग की लगभग 20 वर्ष की युवती है । अद्भुत सौंदर्य की स्वामिनी है मालिनी !

जो उसे देखता है !

वह उसे देखता ही रह जाता है !

उसकी शालीनता !

उसका व्यवहार और उसका वस्त्र विन्यास !!

उसके अंदर एक देवीय आभा भर देता है....

जो देखने वाले के हृदय में स्वतः ही सम्मान का भाव पैदा कर देता है ।

मालिनी भी वेद विद्या में पारंगत है , इसके अलावा शस्त्र विद्या में भी पारंगत है । उसके पिता सिंहराज राजा

की सेना में सेनापति है । विद्यानंद के घर में मालिनी के अलावा है ... उसका 2 वर्षीय बेटा नीलकंठ !

विद्यानंद के पिता ब्रह्मानंद राजा धर्मेन्द्र के प्रमुख सलाहकार थे । उनके जीवनकाल में ही विद्यानंद की योग्यता को देखते हुए प्रमुख विषयों पर चर्चा के समय उन्हें भी साथ रखा जाता था । इस प्रकार से वे काफी अल्पायु में ही राजकार्य और उससे संबंधित जटिलताओं को समझने लगे थे । विद्यानंद राजा धर्मेन्द्र के समय से ही राज परिवार के करीबी रहे हैं । राजमाता भी उनका सम्मान करती है और इसलिए राजा वीरेन्द्र भी उनकी सलाह को प्रमुखता से मानते हैं ।

राज्य में वसंत उत्सव का आयोजन किया जाता है ।

जिसमें सभी निवासी उन्मुक्त भाव से भाग लेते हैं । वसंत उत्सव में भाग लेने का उत्साह युवाओं में सबसे ज्यादा होता है । वहां अपने हम उम्र युवाओं से मिलने का अवसर मिलता है और कई जोड़ियां भी बन जाती है ।

इस वर्ष भी बसंत उत्सव का आयोजन किया गया ।  
जिसमें राजमाता कामायनी अपने पुत्र के लिए एक श्रेष्ठ  
वधू की कामना के साथ सम्मिलित हुई । वसंतोत्सव में  
अन्य आयोजनों के साथ कई प्रकार की प्रतियोगिताएं  
भी आयोजित की जाती है । जिसमें काव्य पाठ  
नाटिका संगीत वाद विवाद जैसे आयोजन शामिल  
रहते हैं जिन में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को श्रेष्ठ  
प्रदर्शन के लिए राज्य की तरफ से पुरस्कार भी मिलता  
है....सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले को "राज्यश्री" पुरस्कार  
से सम्मानित किया जाता है ।

आयोजन प्रारंभ हुए....

राज्यश्री का पुरस्कार मिला मंजरी को !

मंजरी नगर सेठ लक्ष्मीदास की पुत्री है !

मंजरी का रंग कुछ-कुछ वैसा है जैसे दूध में हल्का सा  
केसर मिला दिया गया हो !

मंजरी को देखने पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसके  
शरीर के हर अंग को किसी सांचे में ढाल कर निकाला  
गया हो ...

काले रंग की उसकी सघन केशराशि नितंबों तक किसी  
अल्हड़ नदी की तरह बिखरी हुई है । कमानादार भौंह

को देखकर ऐसा लगता है जैसे कामदेव ने साक्षात अपने धनुष को प्रत्यंचा चढ़ाने के लिए तान रखा हो ...

भंवरे के सदृश्य काली और कजरारी आंखें अनंत गहराई अपने आप में समेटे हुए हैं ! जिसे देखते ही देखने वाला उस सौन्दर्य के महासागर में डूब जाता है ...

उन्नत स्तन और पृथुल नितंबों से युक्त उसकी देहयष्टि साक्षात रति की उपस्थिति का एहसास कराती है । ऐसा लगता है जैसे साक्षात षोडशी त्रिपुर सुंदरी मानव वेश धारण करके इस धरा पर अपना लास्य दिखाने के लिए उतर आई हो ।

सोलह वर्ष की मंजरी संगीत और नृत्य दोनों कलाओं में निपुण है । साथ ही उसकी विशेष रुचि शस्त्र विद्या में भी है । वह मालिनी की शिष्या है । उसकी शस्त्र चालन की प्रतिभा अपने आप में अद्भुत है । वह दोनों हाथों से तलवार चला सकती है और एक बार में 4 लोगों से एक साथ युद्ध कर सकती है । मालिनी को अपनी शिष्या पर गर्व है और उसे वह अपनी पुत्री जैसा मानती है .....

राजमाता कामायनी को मंजरी में अपनी बहू दिख रही थी । उसने मालिनी से इस विषय पर राय ली !

मालिनी मंजरी को अच्छी तरह से जानती थी । इसलिए उसने राजमाता की पसंद को उचित बताया ....

अगले दिन राजमाता ने नगर सेठ को बुलावा भेज दिया । नगर सेठ तत्काल राजमहल में प्रस्तुत हुए । राजमाता का प्रस्ताव सुनकर नगरसेठ भाव विह्वल हो उठे ! उन्होंने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया । इस प्रकार से राजा वीरेंद्र का विवाह मंजरी से होना निश्चित हो गया । सारे राज्य में खुशी की लहर थी सर्वत्र इस विवाह की तैयारियां चालू हो गई ...

विद्यानंद शास्त्री अपने साधना कक्ष में बैठे हुए थे ! तभी ! अचानक उन्हें एक गंभीर संकेत प्राप्त हुआ । यह एक ऐसा संकेत था जो राज्य पर आने वाली किसी भीषण विपत्ति का प्रतीक था ।

उन्हें समझ में नहीं आया कि यह क्या था । उन्होंने अपनी गणना और ज्योतिष विद्या के आधार पर किसका पता लगाने की भरपूर कोशिश की और लगभग 4 घंटे के चिंतन मनन के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि उत्तर की तरफ से आक्रमण की संभावना है ।

यह एक भीषण विपत्ति थी जिसके विषय में राजा को सूचित करना उन्होंने बेहद जरूरी समझा ।

विवाह की तैयारियां भी चल रही थी ऐसी स्थिति में राजा को परेशान करना भी उचित नहीं था । उन्होंने सेनापति को संपर्क किया और अपने गुप्तचरों के माध्यम से विषय वस्तु पता करने का निर्देश भी दिया ।

उन्होंने राजमाता कामायनी से मिलकर इस संभावित खतरे की सूचना भी दे दी । राजमाता पशोपेश में थी कि राजा वीरेंद्र को इस बारे में जानकारी दे ना दे लेकिन अंततः भावनाओं पर कर्तव्य की विजय हुई और उन्होंने राजा वीरेंद्र को इस संबंध में जानकारी भी दे दी ।

अर्धरात्रि के समय मंत्रणा कक्ष में राजमाता कामायनी, राजा वीरेंद्र, सेनापति सिंहराज और आचार्य विद्यानंद मौजूद थे ।

गुप्तचरों के द्वारा जो सूचना प्राप्त हुई थी वह बेहद गंभीर और खतरनाक किस्म की थी । उत्तर दिशा में दो राज्य थे वीरगढ़ और प्रतापगढ़ । वीर गढ़ का राजा विजय प्रताप और प्रतापगढ़ का राजा मंदार देव कई बार महेंद्रगढ़ पर आक्रमण कर चुके थे लेकिन हमेशा उन्हें

मुंह की खानी पड़ी थी । इस बार उन्होंने आपस में संधि करके मिलकर महेंद्रगढ़ पर आक्रमण करने का विचार किया था ।

युवा राजा वीरेंद्र को युद्ध का अनुभव नहीं था । वह इस बात का फायदा उठाने चाहते थे । उसके विवाह का अवसर राज्य वासियों और सेना दोनों के लिए उत्साह का विषय था । ऐसी परिस्थिति में उनके बीच में जो लापरवाही का भाव पैदा होगा उसका फायदा उठाना उन का प्रमुख उद्देश्य था । इस अवसर का लाभ उठाकर वह महेंद्रगढ़ पर कब्जा करने के लिए तैयारियां पूरी कर चुके थे ।

महेंद्रगढ़ की सीमा के पास दोनों राज्यों की सेनाएं पहुंच चुकी थी । उनकी तैयारियों को देखते हुए ऐसा लग रहा था जैसे वह एक-दो दिन के अंदर ही राज्य पर आक्रमण कर देंगे ।

सेना की संख्या को देखते हुए महेंद्रगढ़ की सेना की तुलना में दोनों राज्यों की सेना लगभग डेढ़ गुना थी । यह सबसे गंभीर चिंता का विषय था !

देर तक चली मंत्रणा का अंततः यही निष्कर्ष निकला कि शत्रु पर उसी की भूमि में आक्रमण कर देना ज्यादा बेहतर होगा ।

महेंद्रगढ़ के उत्तरी छोर में पहाड़ियां थी । उन पहाड़ियों के बीच से निकल कर ही सेनाएं महेंद्रगढ़ की सीमा तक पहुंच सकती थी ।

आधी सेना पहाड़ी पार कर चुकी थी । बाकी सेना के अगले दिन पहाड़ी पार करके इस पार आ जाने की संभावना थी । एक बार पहाड़ी पार कर लेने के बाद सेना को रोक पाना बहुत मुश्किल हो जाता । इसलिए यह तय किया गया की पहाड़ी के उस पार खड़ी हुई सेना को किसी प्रकार से पहाड़ी के इस पार होने से रोका जाए ।

इस बीच में पहाड़ी पार कर चुकी सेना पर आक्रमण करके उसे वापस लौटने या समर्पण करने के लिए मजबूर कर दिया जाए । काफी सोच-विचार के बाद सभी लोगों ने इस योजना को फाइनल कर दिया । सेना को तुरंत तैयार होने का आदेश दे दिया गया । आनन-फानन में सभी लोग तैयार हो गए । समस्या यह

थी कि यह युद्ध दो प्रकार से लड़ना था जिसमें से पहला गोरिल्ला युद्ध होता..... जो पहाड़ी के उस पार खड़ी सेना को रोकने के लिए लड़ा जाना था । दूसरा युद्ध आमने सामने वाला युद्ध होता... जो पहाड़ी के इस बार आ चुकी सेना के साथ होना था । अतः सेना भी दो टुकड़ों में बांट दी गई ।

गुरिल्ला टुकड़ी का नेतृत्व सेनापति सिंहराज ने किया, क्योंकि वह सबसे जटिल कार्य था । मुख्य सेना का नेतृत्व राजा वीरेंद्र करने वाले थे ।

रात के अंधेरे में सिंहराज अपने विश्वस्त सैनिकों की टुकड़ी लेकर खाना हो चुके थे । सामने खड़ी हुई सेना को पता लगे बिना पहुंचना था इसलिए यह तय किया गया कि उनसे काफी दूरी बनाते हुए उन को पार किया जाएगा । एक बार पहाड़ी के बीच का रास्ता बंद करते ही पीछे से भी आक्रमण कर दिया जाएगा ।

जाने से पहले सेनापति सिंह राज ने अपनी बेटी मालिनी से मुलाकात की और विदाई ली । जिस युद्ध में वह जा रहे थे उसका कोई निश्चित परिणाम नहीं था और यह

उनका अंतिम युद्ध भी हो सकता था । मालिनी उनकी इकलौती बेटी थी और उससे वह अथाह प्रेम करते थे । प्रत्येक युद्ध में जाने से पहले वह उससे मिलने जरूर जाते थे ।

मालिनी ने उन्हें सहर्ष विदा किया !

रात को सोते समय मालिनी को अपने पति विद्यानंद शास्त्री के चेहरे पर तनाव और चिंता की लकीरें दिख रही थी ।

उसने इसका कारण पूछा - आप चिंतित दिखाई दे रहे हैं कोई विशेष कारण ?

विद्यानंद शास्त्री काफी देर तक मौन बैठे रहे । इससे मालिनी की चिंता और बढ़ गई । थोड़ी देर बाद शास्त्री बोले - मालिनी ! परिस्थितियां काफी गंभीर है ।

हमारी सेना की संख्या से तीन गुनी संख्या उस संयुक्त सेना की है जो हमारे ऊपर आक्रमण करने आ रही है । यही मेरी चिंता का विषय है ।

राजा वीरेंद्र अभी अनुभवहीन है ....

यह मेरी चिंता का दूसरा कारण है ।

इस बार उन्हें स्वयं निर्णय लेना होगा क्योंकि सेनापति दूसरी टुकड़ी में हैं और वह उनके पास नहीं होंगे ।

मालिनी - क्या आपको महाराज पर विश्वास नहीं है ?

आचार्य मुस्कुराए बोले - ऐसी बात नहीं है, मालिनी ।

जब भी युद्ध होता है तो उसमें अनुभव की अपनी एक विशेष भूमिका होती है । इसलिए मैं थोड़ा सा चिंतित हूँ ।

मालिनी बोली - फिर आपको भी साथ में जाना चाहिए था ।

आचार्य फिर मुस्कुराए - मालिनी , तुम भी जानती हो कि मुझे युद्ध कला नहीं आती । इसलिए मेरा युद्ध क्षेत्र में जाने का कोई प्रयोजन नहीं होता, बल्कि मेरी सुरक्षा के लिए वे चिंतित रहते।

मालिनी उनकी बातों में छुपे हुए गूढ़ अर्थ को समझ रही थी ।

उसने अपने सभी शिष्याओं को सतर्क रहने का निर्देश भिजवा दिया । मालिनी ने लगभग पाँच सौ युवतियों और महिलाओं को युद्ध कला की शिक्षा दी हुई थी ।

सारी महिलाएं किसी भी संभावित परिस्थिति के लिए तैयार हो गई ।

अगले दिन प्रातः काल सिंहराज तथा उनकी टुकड़ी पहाड़ियों तक पहुंचने में कामयाब हो गई । उन्होंने पहाड़ी के बीच के रास्ते को पत्थर गिरा कर ब्लॉक कर दिया । जिसकी वजह से अब उस पार की सेना का इस पार आना विलंबित हो गया ।

पत्थर हटाए बिना सेना उस रास्ते से आगे नहीं बढ़ सकती थी ....

इधर राजा वीरेंद्र अपनी सेना को लेकर पहाड़ी पार कर चुकी सेना के सामने पहुंच चुके थे । भयानक युद्ध प्रारंभ हो गया । पीछे से सैनिक सहायता आने की संभावना के चलते शत्रु सैनिकों का उत्साह आसमान पर था । दोपहर होते-होते जब सहायता नहीं आई तो उनका मनोबल गिरने लगा । तब तक सिंह राज और उनकी टुकड़ी ने पीछे से आक्रमण कर दिया । इस दो तरफा आक्रमण से घिरे राजा विजय प्रताप को बंदी बना लिया गया ।

विजयी होकर सेना वापस अपने नगर की ओर लौट गई । साथ में था बंदी राजा विजय प्रताप । महेंद्रगढ़ की सेना को भी गंभीर क्षति पहुंची थी । उसके काफी सैनिक मारे जा चुके थे और जो बचे थे उसमें से भी काफी बड़ी संख्या घायलों की थी । वापस पहुंचने के बाद सभी का इलाज प्रारंभ हो गया ।

आचार्य विद्यानंद शास्त्री मृत संजीवनी विद्या जानते थे ।

मृत संजीवनी विद्या एक अत्यंत ही गोपनीय विद्या है । जिसके माध्यम से किसी भी मृत व्यक्ति को जीवित किया जा सकता है । इसका उल्लेख सबसे पहले दैत्य गुरु शुक्राचार्य के संदर्भ में मिलता है ।

भगवान शिव की आराधना करके दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य ने भगवान शिव से मृत संजीवनी विद्या प्राप्त की थी । जब भी दैत्यों और देवताओं का युद्ध होता तो शुक्राचार्य सारे मृत व्यक्तियों को इस विद्या के द्वारा जीवित कर देते थे । इस प्रकार से युद्ध में देवताओं की हार हो जाती थी । धीरे-धीरे दैत्यों का बल बढ़ता गया और उन्होंने देवताओं को पूरी तरह से अपने अधीन कर लिया । वे उन पर अत्याचार करने लगे ।

दिया गया हो और उनके ऊपर डब्बों में औषधियों के लेप के साथ उन शवों को लटका दिया गया हो ।

पंद्रह दिन तक वे इसी प्रकार लटके रहते थे । उन पर बीच बीच में पहाड़ी से लाल रंग का पानी बूंद बूंद करके गिरता रहता था । इस दौरान किसी को भी उस पहाड़ी की तरफ जाने की इजाजत नहीं होती थी । रोज आचार्य विद्यानंद शास्त्री रात के समय लगभग 11 से 1 के बीच का समय उसी पहाड़ी के पास विभिन्न प्रकार के औषधियों के द्वारा हवन करते हुए बिताते थे । जिनका धुआँ उन मृत देहों तक पहुंचता था । इससे सभी प्रकार के घाव अपने आप भर जाते थे ।

सोलहवें दिन...

मृत संजीवनी मंत्र प्रयोग के द्वारा विद्यानंद शास्त्री सैनिकों की मृत देहों में प्राण फूंक देते थे ...

वह प्रक्रिया भी चालू थी .....

उधर शत्रु सेना की दूसरी टुकड़ी जो पहाड़ी के उस पार थी । वह पत्थर हटाने के काम में लगी हुई थी । देर रात तक उनका काम चलता रहा और वह उसमें कामयाब भी

दिया गया हो और उनके ऊपर डब्बों में औषधियों के लेप के साथ उन शवों को लटका दिया गया हो ।

पंद्रह दिन तक वे इसी प्रकार लटके रहते थे । उन पर बीच बीच में पहाड़ी से लाल रंग का पानी बूंद बूंद करके गिरता रहता था । इस दौरान किसी को भी उस पहाड़ी की तरफ जाने की इजाजत नहीं होती थी । रोज आचार्य विद्यानंद शास्त्री रात के समय लगभग 11 से 1 के बीच का समय उसी पहाड़ी के पास विभिन्न प्रकार के औषधियों के द्वारा हवन करते हुए बिताते थे । जिनका धुआँ उन मृत देहों तक पहुँचता था । इससे सभी प्रकार के घाव अपने आप भर जाते थे ।

सोलहवें दिन...

मृत संजीवनी मंत्र प्रयोग के द्वारा विद्यानंद शास्त्री सैनिकों की मृत देहों में प्राण फूँक देते थे ...

वह प्रक्रिया भी चालू थी .....

उधर शत्रु सेना की दूसरी टुकड़ी जो पहाड़ी के उस पार थी । वह पत्थर हटाने के काम में लगी हुई थी । देर रात तक उनका काम चलता रहा और वह उसमें कामयाब भी

हो गए । अगले दिन सुबह बची हुई सारी सेना पहाड़ी पार करके इस पार आ गई ।

उन्होंने महेंद्रगढ़ पर आक्रमण कर दिया । संभावित आक्रमण के लिए तैयार बची खुची सेना के साथ सेनापति सिंह राज आक्रमण का सामना करने के लिए आगे बढ़े ।

युद्ध चलता रहा ...

इस बार पलड़ा शत्रु सेना का भारी लग रहा था ।

महेंद्रगढ़ की सेना की संख्या दुश्मन की सेना की संख्या के सामने काफी कम थी ... ऐसा लग रहा था जैसे वे हार जाएंगे । लगभग एक तिहाई सेना खत्म हो चुकी थी । लगातार सैनिकों की गिरती संख्या को देखकर सेना का मनोबल भी धीरे-धीरे कम हो रहा था । सिंह राज इस स्थिति को भाप रहे थे । वे अपनी तरफ से सैनिकों के उत्साहवर्धन का भरपूर प्रयास करते हुए लगातार शत्रु सेना के ऊपर आक्रमण कर रहे थे । किसी समर्पित सैनिक की तरह वह अपनी सेना के साथ अंतिम सांस तक अपने राज्य की रक्षा के लिए लड़ने को तत्पर थे ।

लेकिन.....

उनको भी ऐसा प्रतीत हो रहा था कि इस बार युद्ध बेहद कठिन परिणामों की ओर जा रहा है

तभी ...

घुड़सवार सैनिकों की एक टुकड़ी बड़ी तेजी से महेंद्रगढ़ की तरफ से आई ...

यह देखते ही सेना का उत्साह बढ़ गया और उन्होंने फिर से तेजी से आक्रमण चालू कर दिया ।

नई सैनिक टुकड़ी तूफान की तरह शत्रु सेना के अंदर घुसती चली गयी । कुछ ही समय के अंदर शत्रु सेना ताश के पत्तों की तरह बिखरने लगी ।

नई टुकड़ी के सैनिकों को और उनकी तलवार चलाने की कुशलता को सिंहराज देखते रह गए । बिजली की गति से उन सैनिकों की तलवार चलती और सोचने से पहले ही शत्रु सैनिकों के सिर धड़ से अलग हो जाते हैं । उसके जमीन पर गिरने से पहले ही दूसरे सैनिक की गर्दन पर वार हो चुका होता । ऐसा लग रहा था जैसे सर काटने की मशीन हो । उनके शौर्य को देखकर उसे आश्चर्य हो

रहा था कि इतने वीर सैनिकों के बारे में उसे कैसे नहीं पता !

नई टुकड़ी का नायक शत्रु सेना को चीरते हुए सीधे राजा मंदार देव के सम्मुख जा पहुंचा और उनपर भयानक प्रहार किया और उस प्रहार से मंदार देव की मृत्यु हो गई । मंदार देव की मृत्यु होते ही सेना का मनोबल टूटने लगा ।

घबराया हुआ सैनिक किसी काम का नहीं होता और वह आसानी से पराजित हो जाता है .....

शाम होते-होते सारी परिस्थितियां बदल चुकी थी । शत्रु सेना पराजित होकर मैदान छोड़ भाग चुकी थी । सिंहराज ने सैनिक टुकड़ी के नायक को अपने सामने बुलाया ।

शिरस्त्राण हटाते ही उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा ....

वह कोई और नहीं बल्कि उनकी स्वयं की पुत्री मालिनी थी !

मालिनी और उनकी शिष्याओं की टुकड़ी ने शत्रु सेना की कमर तोड़ कर रख दी थी । जिसमें प्रमुख भूमिका निभाई थी मंजरी ने !

मालिनी और मंजरी की सेना ने शत्रु सेना के सैकड़ों सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया था । सेनापति सिंहराज की छाती गर्व से और चौड़ी हो गई । उनकी पुत्री ने राज्य के सम्मान को बचाने में जो योगदान दिया था वह वास्तव में अद्भुत था ।

इस प्रकार वह भयानक युद्ध महेंद्रगढ़ की सेना ने जीत लिया । मालिनी और मंजरी को राजमाता ने उनकी पूरी टुकड़ी के साथ बुलाकर सम्मानित किया ।

राजा वीरेंद्र का मंजरी के साथ विवाह संपन्न हुआ ।

सारे राज्य में हर्ष और उल्लास का माहौल बना हुआ था ।

प्रथम रात्रि के लिए विशेष व्यवस्था की गई थी ।

राजा के शयनकक्ष को बेहद भव्यता के साथ सजाया गया था ....

मंजरी सोलह सिंगार करके बिस्तर पर सिकुड़ी हुई बैठी थी । द्वारपाल ने राजा के आगमन की घोषणा की और सभी दासियां खिलखिलाती हुई कमरे से बाहर हो गई । राजा वीरेंद्र के अंदर आते ही शयनकक्ष का द्वार बंद हो गया । मंजरी के दिल की धड़कन और तेज हो गई । विवाह की प्रथम रात्रि किसी भी स्त्री के लिए एक ऐसा अनुभव होता है जो उसके अंदर भय, उल्लास, उत्साह, उत्सुकता और न जाने कितने भावों को एक साथ पैदा करता है ।

पुरुष के लिए भी यह एक जटिल विषय होता है क्योंकि वह एक ऐसे क्षेत्र में प्रवेश करने जा रहा होता है जिसके विषय में उसने केवल सुना होता है । राजा वीरेंद्र के साथ भी वैसा ही था । वह भी कुछ संकोच कुछ आतुरता कुछ भय और ढेर सारी उत्सुकता के साथ बिस्तर पर आ बैठा ।

वीरेंद्र - मंजरी !

मंजरी खामोश रही ...

वीरेंद्र - मंजरी !

मंजरी - बोलिए राजा जी ।

मंजरी की आवाज सुन के वीरेंद्र का उत्साह बढ़ा !

उसने आगे बढ़कर मंजरी के हाथ को अपने हाथ में ले लिया । मंजरी थोड़ा और सिकुड़ गई ।

जैसे ही वीरेंद्र ने मंजरी के हाथ को पकड़ा दोनों की धड़कनें तेज होने लगी ।

वीरेंद्र भी युवावस्था की प्रचंडता में थे । मंजरी के हाथों का स्पर्श उसे उद्बेलित करने लगा ।

धीरे से उसने मंजरी के हाथों को दबाया मंजरी ने संकोच के साथ उसका प्रत्युत्तर दिया जिससे वीरेंद्र का उत्साह बढ़ा ।

उसने घुंघट उठाया !

मंजरी का सौंदर्य देखकर वीरेंद्र की आंखें स्तब्ध हो गई !

ऐसा अद्भुत सौंदर्य उसने आज तक नहीं देखा था !

सुंदर तो वह थी ही !

लेकिन .....

सोलह सिंगार के बाद वास्तव में साक्षात् रति का विग्रह लग रही थी मंजरी !

जब उसने अपनी काली कजरारी आंखें ऊपर उठाई तो वीरेंद्र अपने आप को रोक नहीं पाया .....

उसने आगे बढ़ कर उसे अपनी बाहों में समेट लिया और उसके आगोश में खो गया ।

उसके बाद वह कक्ष प्रचंड काम युद्ध का साक्षी बना ....  
आने वाले कई दिन दोनों ने यौवन का भरपूर उपयोग किया ।

राजमाता ने राजकाज को अपने हाथों में लेकर वीरेंद्र को मुक्त कर दिया था ताकि वह अपने वैवाहिक जीवन के प्रारंभ को पूर्ण उल्लास के साथ गति दे सके ।

धीरे-धीरे समय बीतता गया ....

राजा वीरेंद्र के विवाह को 2 वर्ष हो चुका था । मंजरी गर्भवती नहीं हुई । यह सभी के लिए चिंता का विषय हो गया था ।

आजकल विवाह के बाद गर्भ निरोध की गोलियां और अन्य उपाय प्रयोग में लाए जाते हैं जिसकी वजह से कई बार संतान की उत्पत्ति में देर हो जाती है ।

उस समय इस प्रकार की कोई उपकरण नहीं थे और सामान्यतः विवाह के प्रथम वर्ष में ही गर्भधारण करने

की संभावनाएं ज्यादा होती थी । उस हिसाब से 2 वर्ष बीत जाना एक लंबा समय था ।

राजमाता कामायनी ने इस विषय पर चर्चा के लिए आचार्य विद्यानंद शास्त्री को बुलाया। शास्त्री जी अपने पोथी पुराण के साथ राज महल पहुंचे ।

ज्योतिष शास्त्र अपने आप में एक बेहद जटिल और व्यापक गणित से युक्त विषय है । यदि ज्योतिषी का काल गणना पर हस्तक्षेप अच्छा हो तो आज भी कई ऐसे ज्योतिषी आपको मिल जाएंगे जिन की कही हुई बातें 90% से ज्यादा सत्य निकलती है । यहां इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि ज्योतिष विद्या तब तक पूर्णतः सफल नहीं हो सकती जब तक ज्योतिष किसी विशेष देवी या देवता की उपासना करके दैवीय कृपा भी प्राप्त न कर ले । काल के भीतर छुपे हुए रहस्यों को जानने के लिए देवीय अनुकंपा अनिवार्य है । ऐसा भी नहीं है कि एक बार देवीकृपा मिल जाए तो वह अनंत काल तक मिलती रहती है । जब तक ज्योतिष का विद्वान अपनी साधना में भी नियमित संलग्नता

को बनाए रखता है तब तक उसका फलित अर्थात् भविष्यवाणियां सही साबित होती रहती है ।

अपने भी अपने आसपास कई ऐसे उदाहरण देखे होंगे ।

अचानक कोई ज्योतिषी प्रसिद्ध हो जाता है कि उसकी बताई हुई बातें हमेशा सत्य निकल रही हैं । धीरे-धीरे उसके यहां भीड़ बढ़ने लगती है । लेकिन अधिकांश केस में ऐसा होता है कि 3 साल या 5 साल गुजर जाने के बाद आपको उस ज्योतिषी का नाम लेने वाला भी कोई नहीं मिलेगा । वह किसी अज्ञात रहस्यमय कारणों से अपनी प्रसिद्धि खो बैठता है । इसके मूल में साधना का अभाव ही प्रमुख कारण होता है । जैसे-जैसे प्रसिद्धि मिलती जाती है ! व्यक्ति अपने आप को ज्योतिष की बजाय सिद्ध पुरुष समझने लगता है ! यह अहंकार उसे साधना के पथ से हटाता है ! उसके फलित को कमजोर करता जाता है ।

एक समय के बाद उसकी भविष्यवाणियां गलत साबित होने लगती है और वह धीरे-धीरे अधःपतन की ओर अग्रसर हो जाता है.....

यह भी महामाया का मायाजाल है.....

और इसके बारे में कुछ भी कहना अनुचित होगा.....

जो ज्योतिषी निरंतर साधना करते रहते हैं उनकी भविष्यवाणियां भी उसी प्रकार से सफल होती है । दक्षिण भारत में कई स्थान ऐसे हैं जो भविष्यवाणियों के लिए प्रसिद्ध है । वहां रहने वाले भविष्यवक्ता साधनात्मक रूप से भी निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं । शुद्धता और पवित्रता के साथ अपना जीवन व्यतीत करते हैं । जिसकी वजह से उनकी भविष्यवाणियां सुनने के लिए बड़े-बड़े लोग जाते हैं । प्राचीन काल में राज्य में राजगुरु हुआ करते थे जो ज्योतिष के विद्वान भी हुआ करते थे । आचार्य विद्यानंद शास्त्री भी ज्योतिष विद्या के मर्मज्ञ थे ।

राजमहल पहुंचने के बाद राजमाता कामायनी ने अपनी बात उनके सामने रखी । मंजरी और राजा वीरेंद्र की कुंडली का अध्ययन करने के बाद जब कुंडली में किसी प्रकार की दिक्कत नहीं दिखाई दी तो आचार्य ने प्रश्न कुंडली के माध्यम से किसी अन्य प्रकार की समस्या की जानकारी लेने का प्रयास किया ।

प्रश्न कुंडली से जब आचार्य ने जानकारी ली तो पता चला कि मंजरी की तरफ से उनके कुलदेवी की ओर से किसी प्रकार की प्रतिकूलता दिखाई दे रही थी । कुलदेवी का तात्पर्य होता है एक ऐसी देवी जिसका पूजन कई पीढ़ियों के पूर्वजों द्वारा लगातार किया जाता रहा हो । यदि इसके विषय में जानकारी ना हो तो महाकाली का पूजन करके भी अनुकूलता प्राप्त की जा सकती है ।

आचार्य ने मंजरी से इस विषय में जानकारी मांगी ।

मंजरी को कुलदेवी के बारे में जानकारी तो थी मगर उससे ज्यादा वह कुछ नहीं बता पाई । आचार्य ने राजमाता से अनुमति मांगी और मंजरी के माता-पिता से इस विषय पर बात करने की कह कर वह निकल पड़े । आचार्य जब मंजरी के घर पर पहुंचे तो सेठ लक्ष्मी दास किसी कार्य से बाहर गए हुए थे । उनकी पत्नी विलासिनी घर पर मौजूद थी । विलासिनी ने आचार्य का स्वागत किया और सम्मान पूर्वक उन्हें बिठाने के बाद आने का कारण पूछा ।

आचार्य - जैसा कि आपको ज्ञात है.... मंजरी को संतान नहीं हुई है और इस विषय पर आज प्रश्न कुंडली के माध्यम से यह ज्ञात हुआ है कि आप के कुल देवी की तरफ से किसी प्रकार की बाधा आ रही है ।

विलासिनी - किस प्रकार की बाधा है कृपया स्पष्ट करें ।

आचार्य - आप की कुलदेवी कौन है और उनका मंदिर कहां पर है ।

विलासिनी - उज्जयिनी की हरसिद्धि माता हमारी कुल देवी हैं ।

आचार्य - क्या आप के द्वारा कुल देवी के यहां जो पूजन करते हैं इसमें किसी प्रकार का नागा या कोई गलती हुई है ?

विलासिनी - नहीं ! हर वर्ष जन्माष्टमी के दिन विशेष पूजन संपन्न करते हैं जो कि नियमित रूप से हो रहा है इसके अलावा और कुछ होगा तो उसकी मुझे जानकारी नहीं है ।

आचार्य - आपने किसी प्रकार की मन्नत मांगी हो और पूरी नहीं की हो ऐसा कुछ है तो बताएं ।

विलासिनी सोच में पड़ गई । काफी देर सोचने के बाद अचानक उसके माथे पर बल पड़ गए । चेहरे पर चिंता की लकीरें दिखने लगी .....

आचार्य - क्या बात है ! बताइए ?

विलासिनी - जब मंजरी 15 साल की हुई थी तब उसके पिता ने अच्छी जगह पर उसके विवाह होने के लिए मन्नत मांगी थी । मन्नत पूरी होने पर उन्होंने देवी माता का भव्य मंदिर बनवाने की बात कही थी..... सब कुछ इतनी तेजी से हुआ कि शायद उनके ध्यान से वह बात ही निकल गई ....

तब तक सेठ लक्ष्मीदास वापस आ गए.....

विलासिनी ने सारी बात उनको बताई ।

सेठ जी माथा पकड़ कर बैठ गए ।

बोले -आचार्य मुझसे बहुत बड़ा अपराध हो गया ।

बिटिया का विवाह महाराज वीरेंद्र जैसे योग्य वर से होने

के कारण मैं इतना ज्यादा प्रसन्ना और उत्साहित हो गया कि माताजी का मंदिर बनाना ही भूल गया । माई ने इतनी अच्छी जगह बच्ची का रिश्ता जोड़ दिया और मैं उन्हीं को भूल गया !

मैं पापी हूँ आचार्य ! बताइए ! अब मैं क्या करूँ ?

आचार्य - लक्ष्मी दास जी , मन्नत मांगने पर उसे पूरा भी करना अनिवार्य होता है अन्यथा कई बार देवीय प्रकोप का सामना करना पड़ता है , इसलिए अभी आप यथाशीघ्र मंदिर निर्माण का कार्य प्रारंभ करवाइए ।

सेठ जी सहमत हुए और अगले दिन से माता हरसिद्धि के मंदिर का निर्माण प्रारंभ हो गया । धन की कोई कमी नहीं थी और अब तो वह राज्य की रानी के पिता का मंदिर था ....

तो बहुत तेजी से काम प्रारंभ हुआ और लगभग साल भर में मंदिर बनकर तैयार हो गया । मंदिर की शोभा देखते ही बनती थी ।

पत्थरों की कारीगरी जहां अद्भुत थी वही मंदिर में लगा हुआ देवी का विग्रह बेहद तेजस्वी और सुंदर था ।

मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का कार्य आचार्य विद्यानंद शास्त्री के निर्देशन में उज्जयिनी से आए ब्राह्मणों ने पूर्ण विधि-विधान के साथ संपन्न किया । इस बीच सेठ लक्ष्मी दास तीन बार हरसिद्धि मंदिर में क्षमा प्रार्थना भी कर आए ।

मंदिर निर्माण के तीसरे महीने मंजरी भी गर्भवती हो गई । गर्भकाल पूरा हो जाने के बाद उसने एक सुंदर बालक को जन्म दिया । बालक के जन्म लेते ही पूरे राज्य में खुशी की लहर दौड़ गई । उसका नाम रखा गया देवेंद्र .....

आचार्य का पुत्र नीलकंठ भी 5 साल का हो चुका था ।

उसका विद्या अध्ययन प्रारंभ हो चुका था । नीलकंठ भी अपने पिता की तरह ही तीक्ष्ण बुद्धि का बालक था । वह जहां पिता से वेदों का ज्ञान प्राप्त कर रहा था वही माता मालिनी से शस्त्र विद्या भी सीख रहा था और दोनों ही विधाओं में उसकी कुशलता देखकर मालिनी और विद्यानंद अत्यंत प्रसन्नता अनुभव करते थे ।

राजकुमार देवेंद्र जब एक साल का हुआ तो सेठ लक्ष्मी दास ने राजमाता से आग्रह किया कि वह मंजरी तथा पुत्र को लेकर देवी हरसिद्धि के दर्शन को जाना चाहते हैं । राजमाता ने सहर्ष इस आग्रह स्वीकार कर लिया ।

प्रकृति का रहस्य प्रकृति ही जान सकती है वह स्थान और घटना का ऐसा संयोग पैदा कर देती है जिसके बारे में सोचना भी असंभव होता है । कुछ ऐसा ही घटित होने वाला था.....

सेठ लक्ष्मीदास अपनी पत्नी , पुत्री रानी मंजरी और नाती राजकुमार देवेंद्र के साथ उज्जयिनी पहुंचे । उज्जयिनी पहुंचने के बाद सबसे पहले वह देवी हरसिद्धि के मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचे ....

पौराणिक कथाओं के अनुसार एक बार माता सती के पिता प्रजापति दक्ष ने एक विराट यज्ञ का भव्य आयोजन किया ।

जिसमें उन्होंने सभी देवी-देवताओं को आमंत्रित किया । परन्तु उन्होंने माता सती व भगवान शिवजी को नहीं बुलाया ।

यज्ञ में भाग लेने के लिए जाते हुए देव गणों के समूह को देखकर देवी सती ने उनसे जाने का कारण पूछा तब उन्होंने यज्ञ के विषय में बताया ।

देवी सती ने भगवान शिव से यज्ञ में भाग लेने के लिए साथ चलने का अनुरोध किया । भगवान शिव ने उन्हें समझाने का प्रयास किया कि दक्षराज नहीं चाहते हैं कि वे वहां पर उपस्थित हो । अतः बिना निमंत्रण के जाने से अपमान का भय रहता है । इसलिए आपको भी नहीं जाना चाहिए ।

स्त्री हठ विश्व प्रसिद्ध है.....

जिससे महामाया भी अछूती नहीं है ।

उनके हठ को देखकर भगवान शिव ने जाने की अनुमति दे दी और माता सती उस यज्ञ उत्सव में उपस्थित हुई । वहां माता सती ने देखा कि दक्षराज उनके पति देवाधिदेव महादेव का अपमान कर रहे थे । वहां उपस्थित कोई भी ऋषि या देवता दक्षराज के इस व्यवहार का विरोध भी नहीं कर रहा था ..... यह देख वे क्रोधित हो अग्निकुंड में कूद पड़ीं ।

यह जानकर भगवान शिव अत्यंत क्रोधित हो उठे और उन्होंने अपने गणों को भेजकर प्रजापति दक्ष के यज्ञ का विध्वंस कर दिया और वीरभद्र ने प्रजापति दक्ष की गर्दन ही काट दी ।

बाद में देवताओं के आग्रह पर उन्होंने प्रजापति की गर्दन पर बकरे का सिर लगाकर उन्हें जीवनदान दे दिया ।

माता सती की मृत्यु से वे बहुत बुरी तरह से आहत हुए थे ।

क्रोध और विषाद की अवस्था में उन्होंने माता सती का शव लेकर सम्पूर्ण विश्व का भ्रमण शुरू कर दिया ।

भगवान शिव का यह स्वरूप पूरे विश्व में दारुणता की सृष्टि करने लगा । शिवजी की ऐसी दशा देखकर सम्पूर्ण विश्व में हाहाकार मच गया ।

देवी-देवता व्याकुल होकर भगवान विष्णु के पास पहुंचे और संकट के निवारण हेतु प्रार्थना करने लगे ।

भगवान विष्णु अंततः इस संकट से मुक्ति दिलाने के लिए तैयार हो गए ।

शिवजी का सती के शव से मोहभंग करने के लिए भगवान विष्णु ने अपना सुदर्शन चक्र चलाया । चक्र से माँ सती के शव के 51 टुकड़े हो गए ।

यह टुकड़े जहां जहां पर गिरे वहां पर देवी के शक्तिपीठ की स्थापना हुई है । ऐसा माना जाता है कि उज्जैन में माँ सती की कोहनी वाला टुकड़ा इस स्थान पर गिरा । तब से माँ यहां हरसिद्धि के रूप में स्थापित हुई ।

उज्जयिन्यां कूर्परं व मांगल्य कपिलाम्बरः ।

भैरवः सिद्धिदः साक्षात् देवी मंगल चण्डिका ॥

उज्जैन के इस स्थान पर सती की कोहनी का पतन हुआ था। यहाँ की देवी को 'मंगल चण्डिका' भी कहा जाता है तथा उनके भैरव 'मांगल्य कपिलांबर' हैं ।

स्कंदपुराण में कथा है कि एक बार जब चंड-प्रचंड नाम के दो दानव बलपूर्वक कैलास पर्वत पर प्रवेश करने लगे तो नंदी ने उन्हें रोक दिया ।

असुरों ने नंदी को घायल कर दिया। इस पर भगवान शिव ने भगवती चंडी का स्मरण किया। शिव के आदेश पर देवी ने दोनों असुरों का वध कर दिया।

इससे प्रसन्न महादेव ने कहा - हे चंडिके ! तुमने इन दानवों का वध किया है। इसलिए आज से तुम्हारा नाम हरसिद्धि प्रसिद्ध होगा।

ऐसा भी माना जाता है कि हरसिद्धि मंदिर का निर्माण सम्राट विक्रमादित्य ने किया था। यह वही विक्रमादित्य हैं जिनके नाम पर हिंदू पंचांग का विक्रम संवत् चलता है।

सम्राट विक्रमादित्य माता हरसिद्धि के परम भक्त थे। किवदंती है कि हर बारह साल में एक बार वे अपना सिर माता के चरणों में अर्पित कर देते थे, लेकिन माता की कृपा से पुनः नया सिर मिल जाता था। बारहवीं बार जब उन्होंने अपना सिर चढ़ाया तो वह फिर वापस नहीं आया। इस कारण उनका जीवन समाप्त हो गया.....

आज भी हरसिद्धि मंदिर के एक कोने में 11 सिंदूर लगे मुण्ड पड़े हैं । कहते हैं ये उन्हीं के कटे हुए मुण्ड हैं। उज्जैन में हरसिद्धि मंदिर ज्योतिर्लिंग श्री महाकालेश्वर मंदिर के पीछे स्थित है ।

उज्जैन ज्योतिष की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। यहां काल के अधिपति महाकाल विराजमान है । जिनकी कृपा के बिना कालगणना या ज्योतिष का कार्य हो ही नहीं सकता .....

हरसिद्धि मंदिर में देवी दर्शन करके भेंट आदि चढ़ाने के बाद सेठ लक्ष्मी दास अपने परिवार के साथ बाहर निकले ।

उज्जैन या यूं कह लीजिए कि भगवान शिव के जितने भी सिद्ध क्षेत्र हैं वहां पर चित्र विचित्र प्रकार के साधुओं का जमावड़ा लगा ही रहता है । इनमें विचित्र वस्त्र धारी साधुओं से लेकर दिगंबर साधु तक सभी प्रकार के आपको दिखाई अवश्य देंगे । वहां रहने वाले लोग भी इनको देखने के आदी हो जाते हैं और उन्हें किसी प्रकार की विचित्रता नहीं लगती लेकिन बाहर से जाने वाले

व्यक्ति के लिए यह कौतूहल का विषय अवश्य होता है  
।

जैसे ही सेठ लक्ष्मीदास परिवार सहित मंदिर से बाहर  
निकले तो उन्होंने देखा कि देवी मंदिर के सामने एक  
तेजस्वी कापालिक बैठा हुआ था ।

नंगा बदन !

शरीर पर लिपटी हुई भस्म !

बगल में रखी हुई चिलम !

सामने सजे हुए नरमुंड !!

गले में अस्थियों की माला !!!

कुल मिलाकर बेहद भयानक व्यक्तित्व का स्वामी था  
वह कापालिक !!!

लेकिन.....

उसकी आंखों में अद्भुत चमक थी ।

ऐसा लगता था जैसे सम्मोहन से भरी हुई आंखें  
हो .....

लगभग साढ़े 6 फुट ऊंचा वह कपाली हटे कट्टे बदन का  
मालिक था ।

उसकी देह यष्टि को देखकर ऐसा लगता था जैसे कोई पहलवान हो ।

गले में पड़ी हुई मालाओं के अलावा ..... पूरे शरीर में कोई वस्त्र नहीं था .....  
पूरी देह खुली हुई थी ।

पूरी दुनिया से बेखबर.....

वह किसी अन्य संसार में खोया हुआ बैठा था !  
ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसे इस दुनिया से कोई लेना देना नहीं है ।

उसके सामने कृपाकांक्षी लोग बैठे हुए थे .....  
अपनी अपनी समस्याओं के बारे में बताते हुए .....

लेकिन वह स्थिर मानस होकर उनकी तरफ ध्यान दिए बिना निश्चिंत बैठा हुआ था !

मंजरी अपने शिशु को गोद में लिए हुए मंदिर से बाहर निकल रही थी ...

जब वह सीढ़ियां उतर रही थी .....

तभी उसकी नजरें कापालिक से जा टकराई ।

कापालिक भी उसी की ओर देख रहा था !  
उसकी आंखों में न जाने कैसा आकर्षण था !!  
मंजरी वहीं थम कर खड़ी हो गई !!!

उसे इस प्रकार खड़ा होता देखकर विलासिनी भी रुक गई ।

जब उसने मंजरी की दृष्टि का पीछा किया तो उसकी दृष्टि भी उस कापाली पर जा टिकी ...

विलासिनी ने उसका हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचा तब जाकर मंजरी का ध्यान भंग हुआ ।

वह नजरें झुका कर सीढ़ियां उतरने लगी ...

लेकिन वह कापाली न जाने क्यों उसके मस्तिष्क में बस गया था .....

पालकी में बैठते समय उसने तिरछी नजरों से फिर से एक बार उसकी ओर देखा !

तब भी उसकी रहस्यमय आंखें उसी की तरफ गड़ी हुई थी .....

वह उन आंखों के प्रति एक अजीब सा आकर्षण महसूस कर रही थी....

उसने बड़ी मुश्किल से अपनी नजरें हटाई ! तब तक पालकी आगे बढ़ चली !!

अब वे लोग महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के लिए जा रहे थे ।

जैसा कि आप लोग भी जानते होंगे कि उज्जैन महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के लिए विश्व प्रसिद्ध है ।

विशेष रूप से अकाल मृत्यु निवारक महामृत्युंजय अनुष्ठान के लिए इससे श्रेष्ठ कोई जगह नहीं है ।

सेठ लक्ष्मी दास ने अपनी पुत्री तथा नाती के साथ-साथ अपने दामाद के लिए भी विशेष अनुष्ठान संपन्न करवाया और उसके बाद अपने रहने के स्थान में वापस लौटने लगे ।

कालों के काल बाबा महाकाल के दर्शन के बाद जब वह वापस आ रहे थे तब भी मंजरी के मस्तिष्क में वह कापालिक ही घूम रहा था ।

सेठ लक्ष्मी दास के मित्र नित्य वल्लभ के निवास पर वे लोग ठहरे हुए थे !

शाम को घर वापस पहुंच जाने के बाद भी मंजरी के हृदय में एक अजीब सी बेचैनी का भाव चलता रहा ! बार-बार उस के मानस पटल पर उस कापालिक का बिम्ब स्पष्ट हो जाता और वह फिर से बेचैन हो जाती ....

ऐसा काफी देर तक होता रहा ....  
फिर उसे गहरी नींद आ गई !

इधर आचार्य विद्यानंद शास्त्री अपने ज्योतिर्विद्या के ग्रंथों में उलझे हुए थे । अचानक उनकी दृष्टि एक अति विशिष्ट योग पर जाकर टिक गयी । वह एक ऐसा योग था जो 12 सौ वर्षों में एक बार आता था । उस योग के विषय में हस्तलिखित ताड़ पत्र में कुछ विशेष जानकारियां दी हुई थी विद्यानंद उसे पढ़ने लगे ।

वह एक अत्यंत रहस्य मय ग्रह नक्षत्रों का संयोग था । जिसमें यदि स्त्री पुरुष मिलकर संतान प्राप्ति का प्रयास करें तो अद्वितीय संतान की प्राप्ति हो सकती थी । जो

अति विशिष्ट गुणों से संपन्न होता । यह मुहूर्त लगभग 1 घटी का था जो उसी रात्रि मैं आने वाला था.....

उस रहस्यमय ताड़ पत्र के ग्रंथ में और भी बहुत सारी बातें लिखी हुई थी । जिसमें अन्य बातों के अलावा यह भी लिखा था कि कुछ विशेष योगिक क्रियाओं के द्वारा अगर मंत्रों के साथ उस विशिष्ट मुहूर्त में गर्भ स्थापना का कार्य किया जाए तो ऐसा शिशु 21 माह का गर्भ काल पूरा करके पैदा होता है । ऐसा शिशु अन्य शिशुओं की तुलना में ज्यादा विकसित होने के साथ-साथ सभी प्रकार की अतिंद्रिय क्षमताओं से युक्त होता है । उसकी कुंडलिनी जन्म से ही स्पंदन युक्त होती है । अल्प समय की साधना और प्रयास से ही आध्यात्मिक उच्चता को प्राप्त कर सकता है ।

इस प्रकार के मुहूर्त में किए गए संसर्ग के परिणाम स्वरूप होने वाले गर्भ में आने के लिए अत्यंत उच्च कोटि की आत्मायें प्रतीक्षा करती रहती है ।

ऐसे समय में होने वाले गर्भाधान में वे शिशु के रूप में जन्म लेकर इस धरा में अनुकूलता लाने का कार्य करते हैं ।

सबसे पहले उन्होंने इस विषय में राजा वीरेंद्र को बताने का मन बनाया ।

तभी उनको ध्यान आया कि रानी मंजरी तो अपने पिता के साथ उज्जयिनी गई हुई है ऐसी स्थिति में उन्हें बताने का कोई औचित्य नहीं था ।

तब उन्होंने अपनी पत्नी मालिनी को इस विषय में बताया ।

हर माता यह चाहती है कि उसका बच्चा सर्वश्रेष्ठ हो । इसके लिए वह निरंतर प्रयत्नशील भी रहती है । यह हर माता के अंदर बसने वाली एक स्वाभाविक इच्छा या प्रवृत्ति है ..... जिसके चलते बोर्नविटा और कॉम्प्लान जैसे फूड सप्लीमेंट आज मार्केट में बसे हुए हैं , क्योंकि मां यह सोचती है कि यह बच्चों को बाकी बच्चों की तुलना में बेहतर बनाने में मदद करेंगे ।

कितना मदद करते हैं यह एक अलग बात है लेकिन मां अपनी तरफ से हर संभव कोशिश करती जरूर है ।

मालिनी ने सहर्ष विद्यानंद शास्त्री का सहयोग किया । रात के लगभग 9 बजे से प्रक्रिया प्रारंभ हुई । मालिनी और विद्यानंद शास्त्री ने लगभग एक घंटे तक मंत्र जाप किया । उसके बाद दोनों ने मिलकर वेद पाठ किया । वेद पाठ पूरा हो जाने के बाद आचार्य ने विशिष्ट मंत्रों के द्वारा अपनी कुटिया के चारों तरफ विशेष रक्षा चक्र का निर्माण किया । द्वारपाल तथा क्षेत्र पाल की स्थापना के साथ उनका पूजन संपन्न हुआ ।

यह एक अति विशिष्ट संयोग था । इसलिए यह जरूरी था कि दैवीय शक्तियों की स्थापना की जाए । ताकि दिव्य शक्ति युक्त आत्मा ही गर्भ में प्रवेश कर सके जो इन देवीय रक्षा चक्रों की अनुमति से अंदर आए ।

यह विश्व विभिन्न प्रकार की आत्माओं से भरा हुआ है । इसमें दुष्ट प्रवृत्ति की आत्माएं भी हैं और अच्छी प्रवृत्ति की आत्मायें भी हैं । स्त्री पुरुष के द्वारा सहवास के द्वारा गर्भ स्थापन के समय जिस प्रकार की मानसिक अवस्था और परिवेश होता है उसके अनुसार आत्माएं सहज ही गर्भ में प्रवेश कर लेती हैं ।

इसे आप कुछ कुछ लाइन लगाने वाली स्थिति के साथ तुलना करेंगे तो आसानी से समझ पाएंगे । कल्पना कीजिए कि कोई बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र है या कोई राहत कैंप लगा हुआ है । वहां पर कोई आदमी बिना किसी पुलिस व्यवस्था के राहत सामग्री बांट रहा है ।

अब जो बदमाश या उद्दंड किस्म का व्यक्ति होगा , वह लाइन की परवाह किए बिना धक्का-मुक्की करके आगे बढ़ जाएगा और राहत सामग्री आसानी से प्राप्त कर लेगा ।

जो कमजोर होगा या बहुत सज्जन किस्म का होगा वह ऐसी स्थिति में भूखा रह जाएगा ।

ठीक यही स्थिति गर्भ की भी होती है । जो बदमाश किस्म की आत्माएं हैं वह बेहद आसानी से गर्भ प्राप्त कर लेती हैं, क्योंकि उनके अंदर छीन कर प्राप्त करने की प्रवृत्ति बहुत प्रबल होती है । वह आसानी से उस गर्भ में प्रवेश कर जाती है जहां आध्यात्मिक ऊर्जा कम होती है ।

आज के समय में यह एक सामान्य समस्या है । सनातन धर्म का पालन करने वाले लोगों में से अधिकांश लोग

अपने देवी-देवताओं पर बहुत ज्यादा विश्वास नहीं करते हैं । करते भी हैं तो हाथ जोड़कर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं । ना ही किसी प्रकार का पूजन संपन्न करते हैं ,और ना ही किसी प्रकार का मंत्र जाप और ना ही किसी प्रकार की ध्यान साधना या योग का उपयोग करते हैं । इसकी वजह से ना उनकी खुद के अंदर आध्यात्मिक शक्ति है और ना ही घर में या उस कक्ष में आध्यात्मिक शक्ति होती है जहां पर वे शारीरिक संबंधों में संलग्न होते हैं और गर्भाधान संपन्न होता है । इसलिए बहुतायत में ऐसे लोग पैदा होते हैं जो मानवता की कसौटी पर रखे जाने पर सबसे निचले दर्जे के मानव में आते हैं ।

शारीरिक सुख के लिए किए जाने वाले संबंध एक अलग विषय है । जब संतान प्राप्ति के लिए संसर्ग किया जाए तो उसको विशेष प्रयास के साथ आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ किया जाए तो श्रेष्ठ आत्मा घर में प्रवेश करती है । जिसका प्रभाव समाज पर भी पड़ता है । संभवत इसीलिए गर्भवती महिलाओं को पहले धार्मिक ग्रंथ तथा कथाएं पढ़कर सुनाई जाती थी

तथा विभिन्न प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान संपन्न करवाए जाते थे ।

इतना सब कुछ लिखने का तात्पर्य सिर्फ इतना है कि यदि माता-पिता गर्भ धारण करते समय अनुकूल वातावरण की व्यवस्था कर पाए तो उनके घर में उच्च कोटि की आत्मा अवश्य जन्म लेगी । जो उनका तथा उनके कुल का नाम अवश्य रोशन करेगी ।

हाँ ! इसके लिए थोड़ा सा प्रयास अवश्य करना पड़ेगा.....

मालिनी इस तथ्य से पूरी तरह से वाकिफ थी !

और आचार्य भी !

दोनों ने अपनी तरफ से पूर्ण श्रद्धा पूर्वक आध्यात्मिक प्रक्रियाओं को संपन्न किया और अनुकूल समय आने पर परस्पर संलग्न हो गए । पति पत्नी के बीच में होने वाले संबंधों की पूर्णता और सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि दोनों के बीच में सामंजस्य कैसा है ? यदि दोनों एक दूसरे की भावनाओं को क्षमताओं को समझते हैं तो उनके बीच के संबंध भी बेहद मधुर और स्थाई होते हैं ।

मालिनी और विद्यानंद इस विषय में बहुत ही सुलझे हुए और सामंजस्य से युक्त गृहस्थी थे । उन्होंने सारी प्रक्रियाएं संपन्न करते हुए उचित समय पर मालिनी के योनि कुंड में आचार्य विद्यानंद शास्त्री ने अपने वीर्य की आहुति प्रदान की ।

पूरा वातावरण एक अद्भुत पद्मगंध से भर गया !  
एक श्रेष्ठ आत्मा के जन्म का प्रारंभ हो चुका था !  
उस समय दोनों का शरीर एक दिव्य आभा से चमक उठा ।

उस पराब्रह्मांडीय आत्मा का गर्भ स्थापन हो चुका था  
और आने वाला समय एक अभूतपूर्व महामानव के जन्म का साक्षी होने वाला था .....

काल की गणना बहुत सारे लोग करते हैं !  
बहुत सारे लोग अपने आप को ज्योतिषी बताते हैं !!  
बहुत सारे लोग अपने आप को त्रिकालदर्शी भी बताते हैं !!!

आजकल ट्रेन की बोगियों और शौचालयों तक में लगे हुए पोस्टरों में ! इस प्रकार के त्रिकालदर्शियों का विज्ञापन लगा रहता है ।

अब यह एक अलग विषय है क्योंकि प्राचीन काल से रावण साधु का भेष बनाता रहा है .....

काल के अधिपति महाकाल और महाकाली की कृपा विरले साधकों को होती है । जो काल की सूक्ष्मता को पकड़ने की कला जानते हैं। ऐसे साधक न सिर्फ सामने वाले के वर्तमान जीवन को बल्कि उसकी कई जन्मों की थाह ले लेते हैं । उनके लिए समय और काल का कोई बंधन नहीं होता वह समय के पार जाकर सब कुछ देख सकते हैं । हॉलीवुड में बनने वाली टाइम मशीन पर आधारित फिल्मों में आप इस प्रकार के प्रसंग देख सकते हैं ।

इस संबंध में एक लघु कथा का विवरण अवश्य देना चाहूंगा जो काल के महत्व को और उसके प्रभाव को बताने के लिए बेहद सक्षम और उपयुक्त होगी ।

प्रभु श्री राम के चरित्र चित्रण की गाथा रामायण की कथा लगभग सभी लोगों को ज्ञात है । उसी संबंध में एक कथा है जिसे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे सुनाया था और उस कथा में समय और उसके महत्व का बहुत

बढ़िया वर्णन किया गया है । जो रोचक भी है और  
काल के महत्व को भी बताती है ...

प्रसंग यह है कि, रामायण का युद्ध अर्थात राम और  
रावण का युद्ध चल रहा था !

भगवान राम ने रावण को बाणों से आबद्ध कर दिया था !  
और वह मृत्यु शैया पर था !!

रावण अपने आप में बेहद उच्च कोटि का विद्वान था !

वह भगवान शिव का प्रिय शिष्य था !

और सबसे बड़ी बात यह है कि....

वह भगवती जगदंबा का भी प्रिय शिष्य था ।

ज्ञान के विषय में अगर देखें तो रावण अपने आप में

अद्भुत और प्रतिभाशाली व्यक्तित्व था !

उसने अपने पुत्र को कालजयी बनाने के लिए ग्रहों की

व्यवस्था तक अपने हिसाब से तय कर दी थी ....

ऐसा महा पराक्रमी रावण अपनी अंतिम सांसे ले रहा था  
।

भगवान राम ने लक्ष्मण जी से कहा - लक्ष्मण ! दशानन रावण अत्यंत प्रकांड विद्वान है ! उसके देह त्यागने के साथ ही कई विद्याएँ भी इस धरा से लुप्त हो जाएंगी ! उसने जो ज्ञान प्राप्त किया है वह अपने आप में अद्भुत है । वह ज्ञान का भंडार है । समय बहुत कम है इसलिए सारी विद्याये तो तुम सीख नहीं सकते लेकिन तुम उनसे काल ज्ञान प्राप्त करो । वह एक अद्भुत विद्या है और रावण उसका प्रकांड विद्वान है ।

लक्ष्मण जी को यह बात बड़ी नागवार गुजरी ! क्योंकि उनकी नजरों में रावण बहुत बड़ा पापी था ! दुष्ट था ! उससे ज्ञान प्राप्त करना उनके लिए बहुत सुखद बात बिल्कुल नहीं थी । लेकिन वे बड़े भाई भगवान राम की आज्ञा का पालन करना अनिवार्य मानते थे , इसलिए अनमने भाव से जाकर रावण के पास खड़े हो गए ।

वह रावण के सिर की तरफ पहुंचे और बोले - मैं अयोध्या के राजा दशरथ का पुत्र लक्ष्मण हूँ । मैं आपसे काल ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ । मुझे काल ज्ञान प्रदान कीजिए ।

रावण ने एक नजर उनकी तरफ देखा और फिर मुंह फेर लिया !

लक्ष्मण कुछ देर तक प्रतीक्षा करते रहे लेकिन ना रावण ने उनकी तरफ देखा और ना ही कोई जवाब दिया .... पहले से ही असहज लक्ष्मण का क्रोध सातवें आसमान पर पहुंच गया और क्रोध से पैर पटकते हुए भगवान राम के पास पहुंचे ।

लक्ष्मण - मैंने आपसे पहले ही जाने को मना किया था । उस अहंकारी रावण ने मेरी तरफ देख कर मुंह फेर लिया ! कोई ज्ञान नहीं दिया ।

भगवान राम - शांत हो जाओ, लक्ष्मण ! मुझे यह बताओ कि तुमने वहां जाकर क्या किया ।

लक्ष्मण - मैं उनके पास जाकर खड़ा हुआ और अपना परिचय दिया और उनसे कहा कि मैं अयोध्या के राजा दशरथ का पुत्र लक्ष्मण हूं । आपसे काल ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूं । इतना सुनकर उसने मेरी तरफ देखा और फिर मुंह फेर लिया ।

भगवान राम - तुम किधर खड़े थे, सर की तरफ या पैरों की तरफ ।

लक्ष्मण - मैं उनके सर की तरफ खड़ा था ।

भगवान राम मुस्कुराए और लक्ष्मण से बोले - लक्ष्मण तुम ज्ञान प्राप्त करने के लिए गए थे । इसका मतलब कि तुम अपने गुरु के पास गए थे अर्थात् रावण गुरु हुआ और तुम शिष्य हुए शिष्य गुरु के सामने केवल शिष्य होता है किसी राजा का पुत्र नहीं । शिष्य का स्थान गुरु के सर के पास नहीं होता बल्कि गुरु के चरणों के पास होता है । तुम इस बात को भूल गए ! लेकिन रावण ज्ञानी है ! वह इस बात को जानता है । इस बार तुम उनके चरणों के पास जाकर खड़े होना । अपना अहंकार भूलकर उनसे ज्ञान की याचना करो । वह अवश्य तुमको ज्ञान प्रदान करेंगे ।

लक्ष्मण जाना नहीं चाहते थे । लेकिन उनके पास कोई दूसरा उपाय नहीं था । बड़े भाई की आज्ञा मानने के लिए प्रतिबद्ध थे !

वह फिर से रावण के पास गए ।

उनके चरणों के पास खड़े होकर उन्होंने कहा - मैं लक्ष्मण ! आपके पास काल ज्ञान की विद्या प्राप्त करने के लिए आया हूं आप कृपा करके मुझे यह ज्ञान प्रदान करें ।

उनके इतना कहते ही रावण ने आंख खोल कर उनको देखा और हाथ उठाकर आशीर्वाद प्रदान किया ।

यह देखकर लक्ष्मण भी आश्चर्यचकित रह गए कि जिस व्यक्ति ने मुझे देख कर मुंह फेर लिया था वह मुझे आशीर्वाद प्रदान कर रहा है ।

तब उन्हें अपने बड़े भाई राम की बात की वास्तविकता और गरिमा का बोध हुआ ।

रावण ने कहा - लक्ष्मण तुम सामने खड़े हुए पेड़ से सात पत्ते तोड़ कर ले आओ ।

लक्ष्मण जी की समझ में नहीं आया कि काल ज्ञान का पत्तों से क्या संबंध ? लेकिन अब रावण ने कहा था तो वह सात पत्ते तोड़ कर ले आए ।

रावण ने उन सात पत्तों को एक के ऊपर एक रखकर अपनी बाईं हथेली पर रख लिया । दाएं हाथ में जमीन पर पड़ा हुआ एक तिनका उठा लिया और शून्य में देखने लगे ...

काफी समय बीत गया.....

लक्ष्मण को झुंझलाहट होने लगी.....

वे धैर्य रखकर खड़े रहे क्योंकि भगवान राम ने उनको ज्ञान प्राप्त करने के लिए धैर्य रखने की सलाह दी थी ।

लगभग पाँच मिनट का समय वैसे ही बीत गया और रावण अपने हाथ में पत्ते और तिनके को लेकर अज्ञात की ओर देखते हुए पड़े रहे । इधर लक्ष्मण का धैर्य जवाब दे रहा था लेकिन वह किसी प्रकार अपने आप को संभाल कर खड़े रहे । समय आगे बढ़ता रहा । उसी अवस्था में दस मिनट का समय बीत गया .....

लक्ष्मण जी का धैर्य जवाब देने लगा.....

तभी !

रावण के आंखों में एक चमक आई !

जैसे किसी वस्तु को जिसे वह प्राप्त करना चाहते थे वह आ गई हो.....

और....

उसने कुछ मंत्रों का उच्चारण करते हुए उस तिनके से उन 7 पत्तों को भेद दिया अर्थात उनके पार कर दिया .....

लक्ष्मण जी के आश्चर्य का कोई अंत नहीं रहा .....

क्योंकि जैसे ही रावण ने उस विद्या का प्रयोग करते हुए उन पत्तों पर तिनके का प्रहार किया .....

वैसे ही .....

पहला पत्ता सोने का बन गया !

दूसरा पत्ता चांदी का बन गया !

इसी प्रकार तीसरा पत्ता तांबे का हो गया !!

और सबसे आखिरी पत्ता पत्ता ही रह गया !!!

रावण की अद्भुत विद्वत्ता को देखकर लक्ष्मण अभिभूत होकर खड़े रह गए.....

उनके हृदय में वास्तव में रावण के प्रति श्रद्धा का भाव जागृत होने लगा ।

रावण ने कहा - हे लक्ष्मण ! काल अत्यंत महत्वपूर्ण है । काल को समझना और काल को उपयोग करना दोनों ही, जीवन के लिए ही नहीं, अपने प्रत्येक कार्य की सफलता के लिए भी अनिवार्य है । उसी के महत्व को समझाने के लिए मैंने तुमको यह उदाहरण दिया है ।  
हर घंटे में एक क्षण ऐसा आता है ....  
एक पल ऐसा आता है....  
जब महालक्ष्मी चैतन्य होती है ....

इसी प्रकार से अलग-अलग देवताओं का अलग-अलग क्षण आता है !  
समय आता है !  
उसका सदुपयोग करना ही काल ज्ञान है ।  
मैंने महालक्ष्मी के उस काल को !  
प्रतीक्षा करके !  
समझ कर !  
उस क्षण विशेष में इस पत्ते पर आघात किया ।  
तुम समझ सकते हो कि वह कितना अल्प समय का महालक्ष्मी का सिद्ध मुहूर्त होता है !  
जिसको पकड़ना होता है....

यह पसंद काल ज्ञान के विषय में और उसकी महत्व को बताने के लिए पर्याप्त है । विशेष पर्व में उन शक्तियों का जागरण होता है और जो उस क्षण विशेष में पूजा कर्म में संलग्न होता है उसे ज्यादा लाभ होता है....

मुहूर्त देखने की जो प्रक्रिया है....

उसका आधार भी यही है ।

इतनी सूक्ष्म काल गणना करने वाले ज्योतिषी भी नहीं रहे और तांत्रिक भी नहीं रहे लेकिन फिर भी बहुत सारी चीजें आप इसके माध्यम से बेहतर समय में कर लेते हैं । वर्तमान काल के पंचांग आदि में इस प्रकार के मुहूर्त अलग से दिए होते हैं । जिनका उपयोग करके आप अपना कार्य प्रारंभ करते हैं और अनुकूलता प्राप्त करते हैं ।

पारद अर्थात् पारे से बना हुआ शिवलिंग अत्यंत उच्च कोटि की आध्यात्मिक चेतना का केंद्र माना जाता है । ऐसा माना जाता है कि जिस स्थान पर वह स्थापित होता है उसके दस मीटर के दायरे में रहने वाले लोगों पर उसका प्रभाव पड़ता है ।

यह पसंद काल ज्ञान के विषय में और उसकी महत्व को बताने के लिए पर्याप्त है । विशेष पर्व में उन शक्तियों का जागरण होता है और जो उस क्षण विशेष में पूजा कर्म में संलग्न होता है उसे ज्यादा लाभ होता है....

मुहूर्त देखने की जो प्रक्रिया है....

उसका आधार भी यही है ।

इतनी सूक्ष्म काल गणना करने वाले ज्योतिषी भी नहीं रहे और तांत्रिक भी नहीं रहे लेकिन फिर भी बहुत सारी चीजें आप इसके माध्यम से बेहतर समय में कर लेते हैं । वर्तमान काल के पंचांग आदि में इस प्रकार के मुहूर्त अलग से दिए होते हैं । जिनका उपयोग करके आप अपना कार्य प्रारंभ करते हैं और अनुकूलता प्राप्त करते हैं ।

पारद अर्थात् पारे से बना हुआ शिवलिंग अत्यंत उच्च कोटि की आध्यात्मिक चेतना का केंद्र माना जाता है । ऐसा माना जाता है कि जिस स्थान पर वह स्थापित होता है उसके दस मीटर के दायरे में रहने वाले लोगों पर उसका प्रभाव पड़ता है ।

जैसे-जैसे पारद शिवलिंग का पूजन होता जाता है उसका प्रभाव का दायरा भी बढ़ता जाता है ।

पारद शिवलिंग के विषय में चर्चा करते समय पूज्य पाद गुरुदेव ने बताया था कि पारद शिवलिंग की का निर्माण करते समय जब उसमें बत्तीस प्रकार की लक्ष्मी की स्थापना की जाती है । उन्होंने बताया था कि हर घंटे में दो बार ऐसे क्षण आते हैं जब लक्ष्मी चैतन्य होती है , तब योग्य तांत्रिक काल के उस क्षण को पकड़ता है । पारद शिवलिंग बनाते समय उसमें 16 घंटे में पूजन करते हुए , हर घंटे में दो बार जब लक्ष्मी चेतन्यता का समय आता है तब पारद शिवलिंग को स्वर्ण भक्षण कराया जाता है अर्थात् सोने का एक अंश पारद शिवलिंग को समर्पित किया जाता है । जिसे वह अपने अंदर ग्रहण कर लेता है । इस प्रकार हर घंटे में दो बार पारद शिवलिंग को स्वर्ण खिलाया जाता है और 16 घंटे में 32 प्रकार की लक्ष्मीयों के लिए 32 बार स्वर्ण भक्षण कराया जाता है । तब वह पारद शिवलिंग अद्भुत लाभकारी प्रभाव कारी शिवलिंग बन जाता है.....

अगर आप विज्ञान के छात्र रहे होंगे तो आप जानते ही होंगे कि पारा एक ऐसी धातु है जो द्रव अवस्था में पाई जाती है । अधिकांश धातुओं को वह अपने आप में घोल लेती है और अमलगम बनाती है । इसके विषय में आप गूगल में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । उस द्रव जैसे लगने वाले पारे को ठोस बनाकर उससे शिवलिंग का निर्माण किया जाता है और वैसे शिवलिंग को 32 प्रकार के शिव स्वरूपों के साथ 32 प्रकार की महालक्ष्मी की स्थापना भी उस शिवलिंग में उपरोक्त प्रक्रिया के द्वारा की जाती है तब वह शिवलिंग आर्थिक समृद्धि प्रदान करने में सहायता प्रदान करता है ।

खैर यह एक अलग विषय हुआ ....

मालिनी और आचार्य विद्यानंद शास्त्री का समागम पूरी शास्त्रीय पद्धति से संपन्न हो चुका था और एक दिव्य आत्मा मालिनी के गर्भ में प्रवेश कर चुकी थी । जिसकी वजह से उसके संपूर्ण आभामंडल में एक अलग निखार आ चुका था ।

उसका आभामंडल दमकने लगा था ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कोई देवी साक्षात् पृथ्वी पर प्रकट हो गई हो.....

सहवास संपन्न होने के बाद फिर से दोनों पति-पत्नी ने शिव शक्ति की प्रार्थना की और विश्राम किया .....

उसी रात मंजरी अपने कमरे में सो रही थी ।

पुत्र देवेंद्र नाना नानी के साथ सोया हुआ था ...

आमतौर पर बच्चे नाना नानी के साथ सोते हैं क्योंकि वहां लाड भी ज्यादा मिलता है और कहानियां भी सुनने को मिलती है । देवेंद्र राजकुमार था और उसका अधिकांश समय राजमहल में ही बीतता था तो नाना नानी के पास रहने का समय उसे कम ही मिलता था । उस कमी की पूर्ति वे अपने इस मंदिर दर्शन में पूरा कर लेना चाहते थे इसलिए उसे अक्सर अपने पास ही सुलाते थे ।

मंजरी अपने कक्ष में अकेली थी ....

मंजरी को उस कापालिक को देखने के बाद ही बड़ी  
अजीब सी बेचैनी हो रही थी ....

उसने बहुत प्रयत्न किया लेकिन उसके मानस पटल से  
वह कापालिक हट ही नहीं रहा था.....

रात हो रही थी और वह सोने के लिए अपने कक्ष में लेटी  
थी ....

दासी उसके पैर दबा कर जा चुकी थी ....

लेकिन .....

नींद उसकी आंखों से अभी भी दूर थी ।

काफी प्रयत्न करने के बाद उसकी आंखें लगी ।  
अचानक.....

उसे दुर्गंध का आभास होने लगा !

उसने जब आंखें खोली तो दंग रह गई .....

उसका स्वर्णिम पलंग महा शमशान के पास पड़ा हुआ  
था....

चिताये जल रही थी ....

उनका धुआँ वातावरण में फैला हुआ था !

मास चर्बी और बाल के जलने की दुर्गंध वातावरण को और भयावह बना रही थी । चट चट की आवाज के साथ चिताएँ जल रही थी .....

अधिकांश चिताएँ लगभग बुझने की स्थिति में आ चुकी थी । हल्की हल्की आंच निकल रही थी.....

श्मशान में उस समय 11 चिताएँ जल रही थी और उन 11 चिंताओं के बीच उसका पलंग पड़ा हुआ था .....

मंजरी बहादुर युवती थी ! फिर भी उसको ऐसा लगा कि भय के मारे उसके प्राण ही निकल जाएंगे !

उसे कुछ भी समझ में नहीं आया !

वह तो कमरे में सोई हुई थी .... यह श्मशान में कैसे आ गई ?

यही सोचते सोचते उसने थोड़ा अपने मन को कड़ा किया और पलंग से नीचे उतर गई और आसपास का निरीक्षण करने लगी ।

अंधेरी रात थी .....

इसलिए बहुत दूर-दूर तक कुछ दिखाई नहीं दे रहा था .....

शमशान और वह भी उज्जैनी का महाशमशान !

केवल औघड़ साधकों की और कापालिकों की ही इतनी हिम्मत होती थी कि वह उस महाशमशान में जा सके ।

सामान्य आदमी तो सांझ ढलने के बाद उधर जाने की सोचता भी नहीं था .....

क्योंकि .....

गलती से अगर किसी कापालिक के हाथ लग गए ! तो !

फिर वापसी की संभावना लगभग असंभव थी .....

क्योंकि .....

उस समय नरबलि भी प्रचलित थी !

इस भय से शाम होने के बाद कोई भी नागरिक शमशान की ओर देखता भी नहीं था ।

इसलिए पूरा का पूरा शमशान सुनसान पड़ा हुआ था ।

अर्धरात्रि के करीब आने का समय हो रहा था ....

ग्यारह चिताओं के बीच में नवयौवना साक्षात् रति स्वरूपा मंजरी हक्की बक्की खड़ी थी ! उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे ?

तभी.....

अंधेरे से निकल कर आता हुआ वह कापालिक दिखाई दिया .....

वह था कापालिक सिद्धेश्वर...

वही ....

जो से मंदिर के सामने दिखा था ।

कापालिक सिद्धेश्वर उज्जैन का एक प्रसिद्ध कापालिक था । उसके नाम से साधक जगत में भय व्याप्त हो जाता था । क्योंकि उसने ऐसी-ऐसी सिद्धियां प्राप्त कर

रखी थी जो सामान्य साधकों के लिए केवल स्वप्न के जैसा था ।

भैरव साधना में सबसे बड़ी सिद्धि 52 भैरव की सिद्धि मानी जाती है । 52 भैरव की सिद्धियां उसके पास थी.....

एक भैरव सिद्ध करने में साधक अपना पूरा जीवन व्यतीत कर देता है, वही कापालिक सिद्धेश्वर के पास 52 भैरव सिद्धि मौजूद थी ।

तांत्रिकों की प्रिय साधना स्थली ....

उस दिव्य शमशान..... के सुनसान होने का एक कारण वह भी था ...

क्योंकि.....

जहां कापालिक सिद्धेश्वर ने अपना त्रिशूल गाड़ दिया .....

उस स्थान को छोड़ देने में ही बाकी तांत्रिक अपनी भलाई समझते थे !

कापालिक सिद्धेश्वर के त्रिशूल गाड़ने का मतलब होता था कि वह उस स्थान पर बैठकर उस रात्रि अपनी गोपनीय साधना संपन्न करेगा ....

उस स्थान पर रहने का मतलब सीधे-सीधे कापालिक सिद्धेश्वर को चुनौती देना....

जिसका परिणाम कुछ भी हो सकता था !

इसलिए अधिकांश तांत्रिक उस स्थान को छोड़ देना ही अपने लिए श्रेष्ठ मानते थे । वह भी एक कारण रहा होगा जिसकी वजह से उस श्मशान में उस रात सन्नाटा छाया हुआ था ।

उस कापालिक को देखते ही .....

मंजरी को समझ में आ गया कि यह पूरा किया धरा इसी कापालिक का है ।

वह रक्षात्मक मुद्रा में खड़ी हो गई ।

मंजरी शस्त्र विद्या और युद्ध कला में निपुण थी ।

दो-चार योद्धा तो उसके लिए कोई मायने ही नहीं रखते थे और यह तो अकेला व्यक्ति था । इसलिए उसे पूरा विश्वास था वह कापालिक को निहत्थे ही मार गिराएगी

। फिर भी उसने चिता में से एक लकड़ी उठा ली और प्रतिरोध करने के लिए तैयार हो गई ।

कापालिक निश्चित भाव से लगभग 20 फुट की दूरी पर उसकी ओर देखता हुआ कुछ देर खड़ा रहा .....

फिर धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगा.....

बेहद भयानक परिस्थिति और परिदृश्य.....

एक युवती !

अकेली !

घनघोर अंधेरे में !

ग्यारह सुलगती चिताओं के बीच खड़ी हुई है !

और !

उसके सामने एक विकराल कापालिक.....

जो धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहा है .....

मंजरी आक्रमण के लिए तैयार थी ।

जैसे ही कापालिक लगभग 4 फुट की दूरी तक  
आया .....

उसने उस डंडे को कापालिक के सर की ओर निशाना  
बनाकर पूरी प्रचंडता के साथ प्रहार कर दिया !

अद्भुत आश्चर्य .....

वह तीन फुट का लट्ठा .....

जो एक सिरे से जल रहा था .....

वह पूरी तेजी से कापालिक की ओर लपका .....

लेकिन .....

उसके पास पहुंचते ही वह एक फूल माला में बदलकर  
उसके गले में जा गिरा !

मंजरी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा !

उसे समझ आ गया कि यह बहुत उच्च कोटि का  
कापालिक है !

सिद्ध है !!

फिर भी .....

उसने दूसरा प्रयास करने की मंशा से पुनः एक और लकड़ी के टुकड़े को उठा लिया । जैसे ही उसे प्रहार करने के लिए आगे बढ़ने वाली थी तभी उसकी आंखें कापालिक की आंखों से जा टकराई .....

और उसके बाद उसे ऐसा लगा.....

जैसे वह पत्थर की हो गई हो !

जलती हुई लकड़ी लिया हुआ उसका हाथ.... हवा में ही रह गया !

वह प्रहार नहीं कर पाई !

वह प्रहार करना चाहती थी लेकिन उसका शरीर उसका साथ नहीं दे रहा था !

वह उस डंडे को जोर से उस कापालिक को मारने के लिए प्रयोग करना चाहती थी लेकिन डंडा उठाया हुआ हाथ ..... हवा में ही रह गया ..... प्रहार नहीं कर पाया ...

इतना विवश उसने अपने जीवन में कभी भी अपने आपको महसूस नहीं किया था ।

कापालिक की आँखें उसकी आंखों में गड़ी हुई थी..... वह धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहा था ।

जैसे जैसे वह मंजरी की ओर बढ़ रहा था .....

मंजरी अपने आपको अवश महसूस करती जा रही थी !

मंजरी को अपने शरीर में उत्तेजना का आभास हो रहा था !

उसे ऐसा लग रहा था !

जैसे उसका शरीर स्वयं उसके नियंत्रण में नहीं रहा ।

उस नंग धड़ंग कापालिक की दृष्टि और उसके अंग प्रत्यंग का पुरुषोचित सौन्दर्य अद्भुत था !

जो किसी भी स्त्री को आकर्षित करने और उसे कामातुर कर देने के लिए सक्षम था ।

उसकी आँखें इतनी सम्मोहक थी कि मंजरी कापालिक के अपने पास आते तक उन आंखों से आंखें तक हटा

नहीं पाई । ऐसा लग रहा था जैसे वह पत्थर की हो गई हो ।

पास आकर कापालिक ने मंजरी के हाथ में पकड़ा हुआ लट्ठा दूर फेंक दिया !

उसने उसके दोनों हाथों को अपने हाथों में ले लिया ।  
जैसे ही उसने मंजरी के दोनों हाथों को अपने हाथों में लिया .....

मंजरी को ऐसा लगा.....

जैसे वह अंदर ही अंदर पिघल रही है.....

उसकी देह उसके नियंत्रण में नहीं रही !

सब कुछ उसके हाथ से छूट जा रहा है !!

कापालिक ने आगे बढ़ कर उसे अपने आगोश में ले लिया !!!

जैसे ही कापालिक ने मंजरी को अपने आगोश में लिया .....

मंजरी को ऐसा लगा .....

कुछ ऐसा जो अप्राप्त था .....

वह उसे प्राप्त हो गया हो !

उसे बेहद तृप्ति का अनुभव हो रहा था !

वह किसी प्रकार का विरोध करने के योग्य नहीं रही !

कापालिक ने उसे अपनी गोद में उठाया और किसी गुड़िया की तरह लेकर उस पलंग की ओर बढ़ गया ।

ग्यारह चिताओं के बीच वह श्मशान उस दिन महा कामक्रीडा का साक्षी बना !

कापालिक ने विभिन्न प्रकार की तांत्रिक क्रियाओं के द्वारा श्मशान को आबद्ध किया चेतन्य किया और मंजरी से भी कुछ क्रियाएं सम्पन्न करवाई ।

दोनों श्मशान में उस राजसी पलंग पर आमने सामने बैठे थे ।

मंजरी किसी पुतले की तरह सम्मोहित बैठी हुई थी और कापालिक चित्र विचित्र प्रकार के मंत्रों का प्रयोग करते हुए अनेक क्रियाओं को संपन्न कर रहा था ।

उसने मंजरी के प्रत्येक अंग प्रत्यंग का अलग-अलग  
मंत्रों के माध्यम से पूजन संपन्न किया ।

पूजन के साथ मंजरी किसी हिमखंड की तरह अंदर ही  
अंदर पिघलती जा रही थी ! असहनीय काम पीड़ा  
उसकी देह को मथने लगी .....

कापालिक का शरीर नीली आभा से जगमगा रहा था !  
अंतिम मंत्र के उच्चारण के साथ कापालिक प्रवेश कर  
गया !

धीरे-धीरे मंजरी के शरीर में भी वह नीली आभा दिखाई  
देने लगी !

श्मशान का भारीपन बढ़ता जा रहा था .....

असंख्य पैशाचिक शक्तियाँ किसी भयानक और हिंसक  
समूह की तरह श्मशान को घेरे खड़ी थी ....

हर कोई ऐसे संसर्ग से प्राप्य दिव्य देह का अभिलाषी  
था ...

लेकिन.....

यह तो किसी अतिविशिष्ट आत्मा के आगमन की भूमिका थी ....

जो दो दिन पहले लिखी गई थी...

दो दिन पहले का समय ....

उज्जैन में काल भैरव मंदिर है ।

इसके विषय में आप लोगों को भी जानकारी अवश्य होगी । उज्जैन का यह काल भैरव का मंदिर किंवदंतियों के अनुसार लगभग छह हजार साल पुराना माना जाता है ।

जिस कालखंड कि मैं बात कर रहा हूं उस समय शिप्रा नदी के तट पर स्थित यह मंदिर वाममार्गी तांत्रिकों की प्रिय साधना स्थली था । उस समय यहां सिर्फ तांत्रिकों को ही आने की अनुमति थी ।

आम आदमी डर के मारे रात के समय उस ओर जाता ही नहीं था । दिन के समय भी अगर गलती से उधर निकल गया तो उसके साथ क्या होगा इस बात का कोई हिसाब किताब नहीं था .....

तांत्रिक और कापालिक शिप्रा नदी के तट पर स्थित भैरव के सिद्ध पीठ में तांत्रिक क्रियाएं करते थे । जिसमें पंच मकारों का उपयोग होता था । बलि भी दी जाती थी ।

समय बदल गया है बलि प्रथा अब लगभग बंद है । आजकल यह मंदिर आम लोगों के लिए खोल दिया गया है ।

भगवान काल भैरव को मदिरा का भोग आज भी चढ़ाया जाता है । जैसे ही मंदिर का पुजारी एक पात्र में मदिरा भरकर उसे भगवान काल भैरव के मुंह से लगाता है वह मदिरा धीरे-धीरे खाली हो जाती है ।

यह कहाँ जाती है ?

क्यों जाती है ?

कैसे जाती है ?

यह एक रहस्य है जिसके बारे में आज तक कोई पता नहीं लगा पाया ....

मंदिर के सामने बनी हुई दुकानों में जब आप पूजन सामग्री लेने जाएंगे तो पुष्प तथा अन्य सामग्री के साथ

आपको बाबा के लिए भोग के रूप में मदिरा की बोतल भी मिलेगी । यहां जितने भी दर्शनार्थी आते हैं, बाबा को भोग जरूर लगाते हैं। प्रसाद के रूप में इसका वितरण किया जाता है ।

भैरव के विषय में थोड़ा सा बताना यहां पर आवश्यक है । भगवान शिव सदैव ध्यान में मग्न रहते हैं और उनके अधिकतर कार्य मानसिक रूप से ही संपन्न होते हैं । यह कार्य संपन्न करते हैं भैरव !

भैरव उनका ही स्वरूप है !

भैरव सदैव क्रियाशील रहता है !

इस सृष्टि में जिस प्रकार के काम होते हैं , वह सारे के सारे भैरव गणों द्वारा ही संपन्न किए जाते हैं ....

भैरव हर कार्य में सक्षम और पूर्णता प्राप्त देवता है ।

खैर हम कहानी की ओर लौटते हैं

उस रात ....

कापालिक सिद्धेश्वर किसी अज्ञात प्रेरणा से उज्जैनी के काल भैरव मंदिर के पास वाली गुफा में पहुंच गया ।  
जो उसका प्रिय साधना स्थल था ....

अर्ध रात्रि करीब आने वाली थी और कापालिक सिद्धेश्वर अपनी नित्य साधना में लगा हुआ था ।  
अचानक उसे अपने सामने एक लाल रंग के प्रकाश पुंज का दर्शन हुआ !  
जिसे देखकर वह तुरंत समझ गया कि यह कोई अत्यंत उच्च कोटि की शुद्ध आत्मा है !

उसने उसे झुककर प्रणाम किया ।  
वह लाल रोशनी का गोला उसके पास आकर हवा में स्थिर हो गया !  
वह एक दिव्य पुरुष आकृति थी !

उसमें से गंभीर स्वर निकला - सिद्धेश्वर ! मैं कापालिक वीरेश्वर हूं !  
इतना सुनते ही सिद्धेश्वर साष्टांग दंडवत की प्रणाम की मुद्रा में जमीन पर बिछ गया ...

सिद्धेश्वर ने अपने गुरु से कपाली वीरेश्वर के विषय में बहुत कुछ सुना था !

उसके गुरुदेव ने ही यह भी बताया था कि कापालिक वीरेश्वर लगभग 300 वर्ष की अवस्था में है और वह विशिष्ट अवसरों पर कपालिकों को उनकी योग्यता के अनुसार अपना आशीर्वाद प्रदान करने के लिए आज भी प्रकट होते हैं ।

यह एक अत्यंत विचित्र मगर सत्य बात है .....

अगर आपकी भावना अच्छी है और आप पूरी क्षमता से मंत्र जाप, साधना, स्त्रोत पाठ, ध्यान या ऐसी ही किसी भी सनातन आध्यात्मिक क्रिया में संलग्न रहते हैं तो कोई ना कोई गुरु सूक्ष्म रूप से आपका मार्गदर्शन अवश्य करता है ....

आपको आगे का रास्ता बताता रहता है । इसका कारण यह है कि यह सब भगवान शिव के द्वारा सृजित हैं ।

जो भी गुरु होते हैं वह भगवान शिव के स्वरूप माने जाते हैं इसलिए जब भी कोई इस मार्ग पर आगे बढ़ता है तो उसे भगवान शिव के प्रतिनिधि के रूप में कोई न कोई मार्गदर्शन अवश्य देता है .....

कापालिक वीरेश्वर भी इसी प्रकार के गुरु थे ।

कापालिक संप्रदाय आज भी विद्यमान है, वे यथासंभव गोपनीय रूप से रहने का प्रयास करते हैं क्योंकि वर्तमान समय के हिसाब से उनकी बहुत सारी क्रियाएं सामाजिक रूप से स्वीकार्य नहीं है ।

कापालिक वीरेश्वर की उस अद्भुत आत्मा को अपने सामने देखने का सौभाग्य मिलने से सिद्धेश्वर अभिभूत हो गया । उस लाल रंग के प्रकाश ने पुरुष आकृति ग्रहण की और उसने कहा - उठो सिद्धेश्वर । मेरे पास समय कम है ! मैं तुमसे एक महत्वपूर्ण कार्य करवाना चाहता हूं ।

कापालिक सिद्धेश्वर - आप आदेश दीजिए । मैं प्रत्येक कार्य के लिए प्रस्तुत हूं । यह मेरा सौभाग्य होगा अगर मैं आपके आदेश का पालन कर पाया ।

वीरेश्वर - सिद्धेश्वर ! मेरी लगभग 400 वर्ष की आयु हो चुकी है ! लगातार इधर-उधर भ्रमण करते हुए मैं कापालिकों का मार्गदर्शन करता हूं । यही मेरा कार्य है । अघोरेश्वर महादेव ने मुझे इसी कार्य के लिए नियुक्त

किया है । मैं अभी इस देह में 100 साल और रह सकता हूँ उसके बाद मुझे देह त्यागनी होगी ! फिर एक लंबी प्रतीक्षा के बाद ही मैं योग्य गर्भ में प्रवेश कर पाऊँगा ।

सिद्धेश्वर - मुझे क्या करना होगा ?

कापालिक वीरेश्वर - दो दिन बाद पंचमी तिथि है और अर्ध रात्रि में एक ऐसा विशिष्ट संयोग उत्पन्न हो रहा है, जिसमें गर्भाधान के समय प्रवेश करने वाली आत्मा को विशिष्ट देह की प्राप्ति हो जाएगी । मैं चाहता हूँ कि तुम इस विशिष्ट मुहूर्त में गर्भाधान की प्रक्रिया संपन्न करो । मैं यह देह त्याग कर उस दिव्य मुहूर्त में गर्भ में प्रवेश कर सकूँगा और पुनः अपना कार्य आगे बढ़ा सकूँगा .....

कापालिक सिद्धेश्वर ने हामी भर दी !

कापालिक वीरेश्वर - सिद्धेश्वर ! जिस स्त्री के गर्भ से मुझे जन्म लेना है वह कल तुझे मंदिर के बाहर दिखेगी ।

सिद्धेश्वर - मैं उसे कैसे पहचान पाऊँगा ।

कापालिक वीरेश्वर - सिद्धेश्वर ! यह एक अद्भुत संयोग होने वाला है ! एक कापालिक और एक राजरानी का संयोग होगा ! वह राजरानी तुझे देख कर थम जाएगी तो समझ लेना कि यह वही है ! यह एक प्रकार से दो विपरीत ऊंचाइयों का मिलन है । संसार से दूर श्मशान में बसने वाला एक कापालिक और एक राज्य को पालन करने वाली एक राज रानी इन दो विपरीत परिस्थितियों में जीने वाले युगल का संयोग उस विशिष्ट क्षण में एक अद्भुत शिशु के जन्म का कारण बनेगा ! जो जन्म से ही तुम्हारी अद्भुत आध्यात्मिक शक्तियों से संपन्न होगा ।

सिद्धेश्वर ने हाथ जोड़कर हामी भरी ।

कापालिक वीरेश्वर ने आगे बढ़कर सिद्धेश्वर के माथे पर दोनों भौ के बीच वाले भाग पर अपने अंगूठे का स्पर्श किया ।

सिद्धेश्वर का पूरा शरीर जैसे किसी विद्युत आघात से थरथरा गया । उसके बाद वीरेश्वर वहां से लुप्त हो गए ।

दूसरे दिन ....

जब कापालिक सिद्धेश्वर मंदिर के सामने खड़ा हुआ  
था.....

तभी उसे मंजरी की सवारी आती हुई दिखी ।

तब तक कोई भी राजरानी मंदिर में दर्शन के लिए नहीं  
पहुंची थी ।

उसे देख कर आभास हुआ कि संभवतः यही वह राजरानी  
है जिसकी जानकारी कापाली वीरेश्वर ने दी थी ।

उसे पुख्ता करने के लिए वह मंदिर के सामने जाकर बैठ  
गया !

उसके बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगा !

जब वह बाहर निकली और उसके नजर पड़ते ही ठिठक  
कर रुकी तो सिद्धेश्वर समझ गया कि यही वह माध्यम  
है जिसका इस समागम के लिए उपयोग करना है और  
उसने कामेश्वर मंत्र का प्रयोग करते हुए अपना सम्मोहन  
बाण चला दिया था.....

यह एक ऐसा प्रयोग होता है जिसके बाद वही होता है  
जो सम्मोहनकर्ता चाहता है !

इसकी क्षमता सम्मोहन कर्ता के साधनात्मक बल पर निर्भर करती है और कापालिक सिद्धेश्वर तो प्रचंड साधनात्मक शक्ति से संपन्न व्यक्तित्व था । इसलिए मंजरी उस पर निगाह पडने के बाद से ही बेचैन होने लगी थी .....

कापालिक सिद्धेश्वर ने सबसे पहले महा श्मशान में अपना त्रिशूल गाड़ा था और उसके बाद अपने सिद्ध सेवकों को मंजरी को पलंग सहित उठा लाने के लिए निर्देश दे दिया था ।

उसकी शक्तियां ऐसी थी जो बड़े से बड़ा पहाड़ उठाकर उसके आदेश पर कहीं भी पटकने में सक्षम थी । उन्होंने बड़ी सरलता से मंजरी को उसके शयनकक्ष से उठा कर उस महा श्मशान में पहुंचा दिया ।

जहां मंजरी के अंग पूजन के बाद समस्त प्रकार की प्रक्रियाओं को संपन्न करते हुए कापालिक सिद्धेश्वर अपनी क्रीडा में लगा हुआ था ।

मंजरी प्रचंड काम सुख में लीन थी !!!!!

उसका संपूर्ण शरीर द्रवित होता जा रहा था .....

उसने कभी भी इस प्रकार का अनुभव नहीं किया था !

अभीष्ट मुहूर्त पास आने वाला था .....

कापालिक शून्य में से खोजकर उस काल को प्राप्त करने के लिए !

उस काल को उपयोग करने के लिए !

सन्नद्ध होता हुआ !

क्रिया में लीन था .....

अचानक सारी चिंताएं भभक कर जलने लगी ।

ऐसा लग रहा था जैसे अचानक अग्नि देवता आक्रोशित हो गए हो .....

उनके तेजस्वी स्वरूप का आभास होने लगा !

उस क्षण ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उस पलंग के ऊपर क्रियाशील युगल के चारों तरफ अग्नि का समुंदर बिखर आया हो ।

तभी .....

अचानक.....

आसमान से कुछ अद्भुत सा .....

विचित्र.....

गहरे लाल रंग का प्रकाश नीचे की ओर आता हुआ प्रतीत हुआ .....

वह उस युगल के ऊपर लगभग 4 फुट की ऊंचाई पर आकर स्थिर हो गया वह पूरा क्षेत्र लाल रंग के प्रकाश से भर गया ।

उसके पहुंचते ही शमशान को चारों तरफ से घेरी हुई पैशाचिक शक्तियां डर कर भाग खड़ी हुई । ठीक वैसे ही जैसे किसी सिंह के आगमन की सूचना मिलते ही मृगों का झुंड बिखर कर भागने लगता है !

कापालिक पूरी क्षमता और नियंत्रण के साथ अपने कार्य में संलग्न था !

वह काल के उस क्षण को भाप रहा था जब उसका अभीष्ट सिद्ध होना था ।

ठीक मुहूर्त के आ जाने पर उसने कार्य को पूर्णता प्रदान की !

उसके साथ ही वह लाल रंग का प्रकाश आगे बढ़ता हुआ मंजरी के गर्भ में प्रवेश कर गया । उसका शरीर हल्के लाल रंग के प्रकाश से प्रकाशित होने लगा ....

मंजरी इस घनघोर प्रयास के बाद शिथिल होकर पड़ी हुई थी ....

उसका अंग-अंग तृप्त हो चुका था .....

ठीक वैसे ही .....

जैसे किसी सूखाग्रस्त भूमि खंड पर अचानक से भरपूर बारिश हो गई हो ....

मंजरी से अलग होकर कापालिक ने फिर से कुछ क्रियाएं संपन्न की और उसके मानस पटल पर इस घटना की स्मृति को धुंधला कर दिया । मंजरी गहरी निद्रा में सो गई ।

कापालिक ने जोर का एक हुंकारा भरा .....

और भभकती हुई आग वापस शांत हो गई ....

उसके संकेत पर पलंग वापस उड़ता हुआ वापस शयनकक्ष तक पहुंच गया ।

अभी भी मंजरी का शरीर लाल आभा से जगमगा रहा था .....

लेकिन वह गहरी निद्रा में थी .....

प्रातः होते-होते लाल आभा समाप्त हो चुकी थी और मंजरी गहन निद्रा में सोई हुई थी ।

सुबह दासी ने आकर उसे उठाने का प्रयास किया लेकिन उसे निर्वस्त्र देखकर वह चादर ओढ़ाकर वापस चली गई । घंटे भर बाद में फिर लौटी लेकिन मंजरी अभी उसी प्रकार निद्रा में लीन थी । यह देखकर दासी ने उसके वस्त्रों को ठीक किया और फिर चली गई ।

जब बालक देवेंद्र जागा !

तो वह भागता हुआ अपनी मां के पास पहुंचा ।

तब भी मंजरी सो रही थी !

जब देवेंद्र ने उसे हिलाया तब उसकी नींद खुली !

उसका सर बहुत बुरी तरह से दर्द कर रहा था । भयंकर पीड़ा हो रही थी । उसने दासी को बुलाया ।

वैद्यराज को बुलावा भेजा गया .....परीक्षण करने के बाद औषधियां दी और कहा कि संभवत यात्रा की थकान की वजह से ऐसा हो रहा होगा । विश्राम करने से आराम मिलेगा ।

उस दिन मंजरी बिस्तर पर ही पड़ी रही ! शाम तक उसका अंग प्रत्यंग बुरी तरह टूटता हुआ लगा ।

उस की ऐसी हालत को देखते हुए वापस जाने का कार्यक्रम एक दिन के लिए विलंबित कर दिया गया । रात तक औषधियाँ चलती रही और मंजरी अपने बिस्तर पर सोती रही । अगले दिन सुबह होते तक उसकी हालत सामान्य हो चुकी थी और फिर सभी लोग वापस महेन्द्रगढ़ की ओर निकल पड़े .....

मंजरी के मानस पर रात में हुई घटना का कोई आभास बाकी नहीं था । उसे रात के बारे में कुछ भी याद नहीं था ।

दासी ने भी उसके निर्वस्त्र होने के विषय में कुछ नहीं कहा क्योंकि वह कोई असामान्य घटना नहीं थी ।

कुल मिलाकर उस रात्रि में मंजरी के साथ जो कुछ भी हुआ वह कापालिक के अलावा किसी को भी ज्ञात नहीं था ।

मंजरी के शरीर में भी एक प्रचंड आत्मा गर्भ धारण कर चुकी थी ।

यह एक विचित्र बात है कि जब भी कोई विशिष्ट व्यक्तित्व इस पृथ्वी पर जन्म लेता है तो उसकी माता को काफी कष्टों का सामना करना पड़ता है । उसका

जन्म भी बड़ी जटिल परिस्थितियों में होता है ।

उदाहरण के लिए हम भगवान कृष्ण के जन्म को ही ले लें । माता देवकी के जैसे संकट और दुखों का सामना शायद ही किसी माता ने किया होगा ।

देवकी विवाह के तुरंत बाद पति सहित कैद कर ली गई ।

उसके सात बच्चों को जन्म होते ही उसके स्वयं के भाई कंस ने मौत के घाट उतार दिया क्योंकि आकाशवाणी के अनुसार देवकी के गर्भ से उत्पन्न होने वाला बालक ही उसके मौत का कारण बनने वाला था ....

इस संबंध में आप लोगों ने महाभारत और कृष्ण सीरियल में अवश्य देखा होगा ।

अब आप स्वयं कल्पना करिए कि उस माता की पीड़ा कितनी बड़ी रही होगी .....

जो अपने पति के साथ कैद में है .....

अपने सामने अपने ही सात सात नवजात बच्चों की जन्म के कुछ ही समय के बाद नृशंस हत्या होते हुए देखी होगी.....

भगवान कृष्ण का जन्म उसी कारागार में हुआ । उनके जन्म लेते ही उनके पिता को उन्हे लेकर यमुना नदी को पार करना पड़ा यानी वे जन्म से ही अपनी स्वयं की माता से दूर हो गए ...

और उनका लालन-पालन माता यशोदा ने किया .....

भगवान कृष्ण इस पूरे पृथ्वी में जितने धर्म है उन सारे धर्मों में इकलौते ऐसे भगवान हैं जो जन्म से ही चमत्कारी है । बाकी अधिकांश भगवान कुछ बड़े होने के बाद चमत्कारों का प्रदर्शन करते रहे हैं .....

लेकिन भगवान कृष्ण का जन्म ही चमत्कारिक है ..... जन्म के साथ ही उनकी अद्भुत लीलाएं प्रारंभ हो जाती है ।

जैसे ही उनका जन्म होता है माता पिता के ऊपर लगी हुई बेड़ियां हट जाती है ।

कंस के कारागार के सारे सैनिक सो जाते हैं !

उसके बाद जब पिता वासुदेव अपने नन्हे बालक कृष्ण को नंद बाबा के यहां छोड़ने के लिए यमुना नदी पार करने का सोचते हैं तो यमुना नदी में बाढ़ आई हुई है.....

हिम्मत करके जब नंद बाबा यमुना नदी में उतरते हैं तो फिर चमत्कार होता है !

जैसे ही यमुना भगवान कृष्ण का चरण स्पर्श कर लेती है वह स्वयं दो फाड़ हो कर रास्ता दे देती है.....

ऐसे अनंत चमत्कारों से युक्त व्यक्तित्व है भगवान श्री कृष्ण !

वे इकलौते ऐसे देवता हैं जिनको सोलह कलाओं से पूर्ण बताया गया है .....

एक ऐसे देवता जो सिद्धांतों पर नहीं चलते.....

एक ऐसे देवता जो हर प्रकार की समस्या को हल करने में सक्षम है.....

एक ऐसे देवता जो समस्या के अनुसार समाधान खोजते हैं और यह समाधान किसी नियम या किसी सीमा से बंधा हुआ नहीं होता है .....

उनकी इन्हीं विशेषताओं के चलते वह काल और देश से परे हैं ....

आज इस पृथ्वी पर शायद ही कोई ऐसा देश होगा जहां पर उनके भक्त नहीं रहते ।

इतने विराट व्यक्तित्व को भी अनंत संकटों के बाद जन्म मिला...

यह भी ऐसा ही एक अवसर था जब अति विशिष्ट आत्माएं पृथ्वी पर जन्म लेने के लिए एक विशिष्ट संयोग के द्वारा अवसर बना रही थी तो माताओं को कष्ट होना स्वाभाविक ही था ....

जब सेठ लक्ष्मीदास वापस महेन्द्रगढ़ की ओर लौटने के लिए नदी पार कर रहे थे तभी नाव पलट गई और सारे लोग नदी की तेज धार में बहने लगे .....

नदी का प्रवाह बहुत तेज था इसलिए कोई किसी को बचा नहीं पाया । देवेन्द्र एक सैनिक के हाथ में लग गया और वह उसे किसी तरह खींचकर किनारे ले आया । सेठ लक्ष्मी दास और विलासिनी भी किसी तरह से बच गए लेकिन मंजरी बहती हुई काफी दूर चली गई.....

मंजरी को तैरना आता था ....

लेकिन नदी का प्रवाह इतना तेज था कि वह उसके साथ बहते बहते काफी दूर निकल गई । जिस स्थान पर वह किनारे लगी वह मछुआरों की बस्ती थी । किनारे

तक पहुंचते-पहुंचते वह लगभग बेहोश हो चुकी थी ।  
मछुआरों ने उसे खींचकर बाहर निकाला । मछुआरों ने  
उसके वस्त्रों को देखकर पहचान लिया कि वह किसी  
राजघराने की महिला है इसलिए उन्होंने उस का विशेष  
ध्यान रखा .....

उधर मंजरी के बह जाने की खबर मिलते ही महेंद्रगढ़ का  
सैनिक दस्ता नाव लेकर उसे खोजने के लिए निकल  
पड़ा और पूछते पूछते वह उस मछुआरों की बस्ती तक  
पहुंच गए और रानी मंजरी को लेकर वापस महेंद्रगढ़ आ  
गए ।

एक हफ्ते के इलाज के बाद मंजरी वापस स्वस्थ हो गई  
।

महीने भर के बाद उसे उल्टियां होने लगी .....

राजवैद्य को बुलाया गया और उन्होंने आकर मंजरी के  
गर्भ से होने की खुशखबरी सुनाई ....

यह सुनकर राजा वीरेंद्र व राजमाता कामायनी अत्यंत  
प्रसन्न हुए ।

तीन महीने गुजर गए .....

इस बीच मंजरी को काफी अजीब सा महसूस होता था क्योंकि कई बार उसे अपने आसपास हल्के लाल रंग की किरणें बिखरी हुई दिखाई देती थी और ऐसा तभी होता था जब वह अकेली होती ...

कभी-कभी बैठे-बैठे उसका ध्यान लग जाता था !  
अजीब अजीब सी चीजें दिखाई देतीं .....

इनमें से जो सबसे ज्यादा दिखाई देती थी वह था ....  
एक महा श्मशान.....

जिसमें एक तेजस्वी कापालिक बैठकर साधना कर रहा है ....

उसके चारों ओर लाल प्रकाश का गोला बना हुआ है .....

उसका सारा शरीर दिन भर तपता रहता ....

वैद्यराज की समझ में इसका कोई समाधान नहीं आ रहा था बुखार की औषधि देने से भी कोई असर नहीं पड़ता था ।

इस संबंध में राजमाता ने आचार्य से संपर्क किया ।  
आचार्य ने महामृत्युंजय मंत्र के जाप की सलाह दी ।  
सेठ लक्ष्मी दास द्वारा बनाए गए हरसिद्धि मंदिर में मंजरी  
के लिए महामृत्युंजय अनुष्ठान प्रारंभ कर दिया गया और  
उसकी हालत थोड़ी थोड़ी सँवरने लगी लेकिन अब भी  
शरीर का ताप वैसा ही रहता था ।

उधर मालिनी अर्थात् आचार्य विद्यानंद शास्त्री की पत्नी  
की स्थिति भी बहुत बेहतर नहीं थी । गर्भाधान के एक  
महीना बीतते बीतते उसकी तबीयत भी खराब होने  
लगी । वैद्यराज को बुलाया गया लेकिन वह भी इसके  
अलावा कुछ नहीं बता पाए कि मालिनी गर्भवती है ।  
पौष्टिक आहार की सलाह देकर वह भी चले गये ।

काफी सेवा शुश्रूषा के बाद धीरे-धीरे मालिनी की  
तबीयत संभलने लगी ....

आचार्य विद्यानंद शास्त्री समस्या को समझ रहे थे ।  
इसलिए उन्होंने अपने नित्य पूजन के साथ मालिनी के  
लिए एक घंटे तक महामृत्युंजय का अनुष्ठान भी प्रारंभ  
कर दिया । महामृत्युंजय मंत्र एक ऐसा मंत्र होता है

जिसे सभी प्रकार के रोगों के निवारण और पूर्ण स्वास्थ्य लाभ के लिए जाप किया जाता है ...

॥ ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे  
सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय  
मामृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ ॥

इस मंत्र का सरल मतलब यह है कि हम भगवान शिव की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो हर श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं ।

उनकी कृपा हमे प्राप्त हो और हम स्वस्थ रहें ।

इसी प्रकार की समस्याओं के बीच दोनों माताओं का गर्भकाल आगे बढ़ता रहा ।

वह शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि की रात्रि थी ।

सफेद चांदनी हर ओर बिखरी हुई थी .....

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे आकाश से अमृत वर्षा हो रही हो ।

चंद्रमा को हमारे मन का अधिपति माना जाता है  
इसलिए चांदनी रात में हमें बहुत सुकून मिलता है और  
अत्यंत शांति का अनुभव होता है ।

पूर्णिमा की अर्ध रात्रि को मालिनी के गर्भ से जुड़वाँ  
बच्चों का जन्म हुआ एक बालक और एक बालिका ।  
दोनों बच्चों को देखते ही ऐसा लग रहा था जैसे अत्यंत  
तेजस्वी आत्माओं ने शरीर को धारण करके जन्म लिया  
है .....

आचार्य विद्यानंद शास्त्री और मालिनी दोनों ही अत्यंत  
प्रसन्न थे । सभी प्रकार के शुभ लक्षण आश्रम में  
दिखाई देने प्रारंभ हो गए थे फूलों के पौधों पर सामान्य  
से अधिक संख्या में पुष्प लगने लगे थे ।

गाय अधिक दूध देने लगी थी ...

यह सब देखकर आश्रम वासियों के साथ साथ आचार्य  
और मालिनी को भी अत्यंत प्रसन्नता हो रही थी ।

पूर्णिमा के बाद कृष्ण पक्ष लगता है ....

कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को मंजरी को प्रसव पीड़ा  
प्रारंभ हो गई ।

रात होते-होते बारिश शुरू हो गई ।

बारिश की तीव्रता बढ़ती चली जा रही थी ऐसा लग रहा था जैसे बारिश सब कुछ बहा ले जाने को आतुर हो ।

अर्ध रात्रि का समय निकट आता जा रहा था....

बारिश के साथ साथ तेज हवाएं चलने लगी !

तूफानी मौसम में सिर्फ बिजली की कमी थी और अर्ध रात्रि का समय पहुंचते-पहुंचते तेज बिजलियां भी कड़कने लगी .....

ऐसे उग्र वातावरण में मंजरी के गर्भ से दो तेजस्वी बालकों का जन्म हुआ ।

सभी तरफ हर्ष का और उल्लास का माहौल था ...

मंजरी के बच्चों का नाम रखा गया राजेंद्र और गजेंद्र ।

उधर मालिनी के बच्चों का नाम रखा गया पूर्णानंद और वैभवी ।

चारों बच्चे धीरे-धीरे बड़े होने लगे ....

बचपन से ही गजेंद्र की हरकतें कुछ अजीब सी हुआ करती थी ।

वह दिन में सुस्त रहता और रात होते ही अत्यंत सक्रिय हो जाता.....

कभी-कभी बैठे-बैठे ध्यान मग्न हो जाता...

दो-दो तीन-तीन घंटे तक वैसा ही बैठा रहता ।

यह सब देख कर मंजरी को चिंता होती .....

राजमहल में बना हुआ शिव मंदिर उसका सबसे प्रिय स्थान था ॥

राजेंद्र इधर-उधर खेलता घूमता था ...

उस समय राजेंद्र शिव मंदिर में शिवलिंग के सामने न जाने किस ध्यान में खोया हुआ घंटों बैठा रहता.....

आचार्य विद्यानंद शास्त्री अपने गुरु से मिलने रुद्रप्रयाग गए हुए थे । मालिनी और बच्चे भी उनके साथ ही थे ।

राजनीतिक स्तर पर भी हलचलें जारी थी । महेंद्रगढ़ के साथ युद्ध में शहीद हुए राजा मंदार देव का बेटा भीषण देव अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए तैयारियां कर रहा था । उसने अपनी सेना को काफी मजबूत कर लिया था ।

राजा विजय प्रताप अब भी भी कैद में थे और उनका बेटा रुद्र प्रताप भी अपने पिता को कैद से छुड़वाने के लिए सभी संभव प्रयास कर रहा था ।

उसके गुप्तचर महेंद्रगढ़ में प्रवेश कर चुके थे ....

उन्होंने कारागार के अंदर रह रहे दो कुख्यात अपराधियों बल्ला और माधो के परिवार वालों के साथ संपर्क करके उनसे संबंध बना लिए थे । दोनों अपराधी किसी गंभीर अपराध मे अनिश्चित काल के लिए कैद में थे । महीने में एक बार उनको परिवार वालों से मिलने की छूट थी ।

गुप्तचर इसी अवसर का लाभ उठाना चाहते थे ।

दो तीन बार उनके परिवार वालों के साथ यह गुप्तचर भी कारागार में गए और वहां के प्रहरीयों को धीरे धीरे उपहार आदि देकर अपने पक्ष में कर लिया । लगभग साल भर में उन्होंने कारागार के प्रहरीयों को पूरी तरह से पटा लिया था ....

दोनों कैदियों के परिवार वाले आर्थिक संकट से जूझ रहे थे । गुप्तचरों ने उनको धन आदि देकर अपनी तरफ मिला लिया था इसके बदले में वे उन के माध्यम से राजा विजय प्रताप को कैद से छुड़वाना चाहते थे .....

इस योजना पर में गुप्तचर लगभग डेढ़ साल से काम कर रहे थे ।

कोई भी स्थिति जब सामान्य रहती है तो व्यक्ति को लापरवाह बना देती है । पिछले तीन-चार साल से किसी प्रकार के युद्ध में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ी थी इसलिए महेंद्रगढ़ के लोग भी लापरवाह हो गए थे । इसी स्थिति का लाभ उठाने में यह गुप्तचर कामयाब हो गए ।

राजा विजय प्रताप को भी कैद के शुरू के वर्ष में विशेष कैदी के रूप में ध्यान रखा जाता था लेकिन धीरे-धीरे वह भी आम कैदियों की श्रेणी में शामिल कर दिए गए थे और उनके ऊपर कोई विशेष निगाह नहीं रखी जाती थी ।

गुप्तचरों ने धीरे-धीरे सुरंग खोदने का सामान उन कैदियों तक पहुंचा दिया ।

उन्होंने राजा विजय प्रताप को बाहर निकालने के लिए सुरंग खोद दी और एक रात राजा विजय प्रताप सुरंग से

होते हुए बाहर निकल आए । गुप्तचर उन्हें सुरक्षित रूप से राज्य से निकालकर अपने राज्य पहुंच गए.....

राजा विजय प्रताप के वापस आते ही रुद्र प्रताप ने आगे की कार्य योजना पर काम चालू कर दिया ....

रुद्र प्रताप ने मंदार देव के बेटे भीषण देव के साथ फिर एक बार हाथ मिला लिया । रुद्र प्रताप और भीषण देव की सेना ने महेंद्रगढ़ पर आक्रमण कर दिया ।

इस बार तैयारी बहुत जबरदस्त थी.....

महेंद्रगढ़ की सेना धीरे धीरे पिछड़ने लगी.....

तीसरे दिन का युद्ध समाप्त होते-होते यह लगने लगा था कि महेंद्रगढ़ की सेना हार जाएगी .....

उसी शाम राजमहल के द्वार पर एक कापालिक प्रकट हुआ ।

उसने राजा से मिलने की इच्छा व्यक्त की ।

दरबान ने राजा के पास सूचना भिजवाई.....

राजा ने कापालिक को मिलने के लिए बुला लिया ।

यह था कापालिक सिद्धेश्वर !

राजा के विशेष मंत्रणा कक्ष में उस समय सेनापति भी मौजूद थे ...

कापालिक को वहीं पहुंचाया गया.....

उस समय साधु संतों को सम्मान दिया जाता था राजा तथा सेनापति दोनों ने प्रणाम किया । आशीर्वाद देने के बाद कापालिक मुस्कुराया ।

कापालिक सिद्धेश्वर - राजन ! हार की चिंता सता रही है ।

राजा वीरेंद्र ने सहमति में सिर हिलाया ।

सिद्धेश्वर - अगर तुम चाहो तो मैं इस हार को जीत में बदल सकता हूँ ।

राजा वीरेंद्र संभावित हार के लिए मानसिक रूप से तैयार हो चुका था । इसलिए यह बात उसे असंभव सी प्रतीत हो रही थी ।

फिर भी.....

कापालिक की आंखों की चमक और उसके हाव-भाव बता रहे थे कि वह एक चमत्कारी व्यक्ति है ...

इसलिए उसकी बात को अस्वीकार करने की इच्छा भी नहीं हो रही थी.....

राजा वीरेंद्र के असमंजस को देखते हुए कापालिक ने जोर का अट्टहास किया और कहा - राजन ! मैं यह युद्ध जितवा सकता हूं ! तुम्हें बस मुझे कुछ दान मे देना होगा ।

राजा ने प्रश्नवाचक निगाहों से उसकी ओर देखा । कपाली समझ गया कि राजा को विश्वास नहीं हो रहा है .....

उसने अपने दोनों हाथों की तालियां तीन बार बजाई ....

तीसरी ताली के साथ ही कापालिक और राजा दोनों उस कक्ष से गायब हो गए ... और....

शत्रु सेना के शिविर के पास पहुंच गए !

यह देखकर राजा भी आश्चर्य चकित रह गया....

वहां पहुंचकर कापालिक ने कुछ मंत्रों का उच्चारण किया और एक महा भयानक आकृति वहां पर प्रकट हो गई.....

उसका आकार लगभग सौ से डेढ़ सौ फुट रहा होगा । वह आकृति जैसे ही प्रकट हुई कापालिक ने उसे कुछ आदेश दिया और शत्रु सेना की ओर वह आकृति चल पड़ी ...

उसके शिविरों के पास पहुंचते ही उनमें आग लगना प्रारंभ हो गया । यह देखकर राजा को समझ में आ गया कि कापालिक वास्तव में महाशक्तिशाली है । वह उसके सामने झुक गया और बोला - आप कृपा करें ।

कापालिक सिद्धेश्वर ने कहा - मुझे कुछ दान मे देना होगा ।

सामने शत्रु सेना खड़ी थी !

अगर वह आक्रमण कर देती तो अगले दिन हार होना लगभग निश्चित था !

ऐसी स्थिति में राजा वीरेंद्र के सामने मरता क्या न करता वाली स्थिति थी । इसलिए राजा वीरेंद्र उसकी बात मानने को राजी हो गया ।

कापालिक सिद्धेश्वर के आदेश पर विशाल आकृति ने पूरी शत्रु सेना का खात्मा कर दिया और विलुप्त हो गई !

अगले दिन जब महेंद्रगढ़ की सेना युद्ध के मैदान में पहुंची तो पूरा मैदान जलकर राख की ढेरी में बदले हुए शिविरों से अटा पड़ा था । ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे भीषण अग्निकांड में सब कुछ जलकर राख हो गया हो ....

इस घटना से सेना में उत्साह भर गया !

साथ ही महेंद्रगढ़ की जनता को भी ऐसा लगने लगा कि राजा वीरेंद्र अद्भुत शक्ति संपन्न व्यक्तित्व है....

हर तरफ उसकी जय कार गूंज रही थी !

महाराज वीरेंद्र ने कापालिक को अपने विशेष अतिथि कक्ष में ससम्मान ठहराया और उनकी सभी प्रकार की सेवा के लिए सेवकों को नियुक्त कर दिया ।

राजा वीरेंद्र ने राजमाता को और मंजरी को सब कुछ बताया !

राज्य को बचाना राजा का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व है और उसके बदले में कोई भी शर्त जो संभव हो स्वीकार करनी चाहिए यह राज धर्म कहता है ...

अगले दिन प्रातः राजा वीरेंद्र कापालिक के कक्ष में पहुंचे ।

कपाली ध्यान की अवस्था में बैठा हुआ था !

राजा वहां पहुंचकर उसके चरणों में बैठे ।

थोड़ी देर में ध्यान भंग हुआ और उसने राजा वीरेंद्र को पूछा - क्या तुम अपने वचन का निर्वाह करने के लिए तैयार हो ?

राजा - आपने मेरे राज्य को बचाया है ! आप आदेश करें कि मुझे क्या दान करना होगा ?

कापालिक सिद्धेश्वर - मेरी वेशभूषा से तुम को पता चल गया होगा कि मैं कापालिक हूं । तुम्हारे घर में एक दिव्य आत्मा ने जन्म लिया है । मेरा यह उत्तर दायित्व है

कि मैं उसकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा विधि अनुसार पूर्ण करूँ ...

इसलिए मुझे तुम्हारा पुत्र गजेंद्र चाहिए !

यह सुनकर राजा सन्न रह गया ....

किसी भी पिता के लिए अपने पुत्र का दान मुश्किल होता है । उससे भी ज्यादा मुश्किल होता है किसी मां से उसके पुत्र को मांग लेना ...

राजा वीरेंद्र यह सोच कर परेशान था कि वह मंजरी तथा राजमाता से सलाह लिए बिना इस प्रकार का निर्णय कैसे कर सकता है ।

उसका असमंजस कापालिक भी समझ रहा था ....

उसने जोर का अट्टहास किया और कहा - राजा तू अपने वचन से पीछे तो नहीं हट रहा ?

राजा वीरेंद्र ने सिर हिलाया !

जैसे कहना चाह रहा हो कि नहीं मैं ऐसा कुछ नहीं कर रहा हूँ ....

लेकिन उसके मुंह से शब्द नहीं निकले ।

कापालिक फिर मुस्कुराया और राजा वीरेंद्र को कहा -  
तुझे राजमाता और अपनी पत्नी से विचार करना होगा !  
जाओ बात कर लो.....  
मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ .....

राजा वीरेंद्र जैसे ऐसे ही किसी अवसर की प्रतीक्षा में था  
ताकि वह वहां से बचकर भाग निकले ....

राजा वीरेंद्र बेहद असमंजस की स्थिति में था क्योंकि यह  
निर्णय उसके अकेले के लेने वाला नहीं था ....  
इस पर वह अपनी मां और मंजरी की राय जानना चाहता  
था ।

राजा वीरेंद्र अपने कक्ष में पहुंचा और उसने राजमाता  
कामायनी और रानी मंजरी को अपने कक्ष में बुलवा  
लिया !

कक्ष का द्वार बंद कर दिया गया और सभी दास दासियों  
को बाहर कर दिया गया ।

यह देखकर मंजरी और कामायनी दोनों थोड़ी सी चिंतित  
अवश्य हुई कि ऐसी क्या बात हो गई जिसके लिए  
इतनी गोपनीय चर्चा की आवश्यकता आन पड़ी है ...

जब एकांत हो गया तब राजा वीरेंद्र ने कहा-एक बेहद  
जटिल निर्णय की स्थिति आ गई है । जिसमें आप  
लोगों की सहमति भी आवश्यक है । इसलिए मैंने  
आपको विशेष मंत्रणा के लिए बुलाया है । जैसा कि  
आप लोग जानते हैं युद्ध चल रहा था और हमारी सेना  
लगभग हार की कगार पर पहुंच चुकी थी । एक दिन  
और युद्ध होता तो यह निश्चित था कि हमारे राज्य पर  
शत्रु सेना नियंत्रण कर लेती ।

शाम को एक कापालिक मुझसे मिलने के लिए आया  
और उसने मुझसे इस पराजय को विजय में बदलने के  
बदले में एक दान की अपेक्षा की । राज्य को बचाने के  
लिए मैंने उस पर सहमति दे दी क्योंकि मेरे पास कोई  
दूसरा उपाय नहीं था । एक राजा के रूप में राज्य को  
बचाना मेरी जिम्मेदारी थी ।

उस कापालीक ने अपने कहे अनुसार रात्रि में ही शत्रु  
सेना के शिविरों को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया जिससे

हमारी सेना विजयी हो गई । अब हमारा राज्य महेंद्रगढ़ प्रतापगढ़ और वीरगढ़ का भी स्वामी हो चुका है । यह सब कुछ उसी कापालिक के आशीर्वाद से संभव हो पाया है ।

इतना कहकर राजा वीरेंद्र थोड़ी देर के लिए रुके ।

राजमाता ने पूछा - कहां है वह कपाली ? उन्हें दान में क्या चाहिए ' क्या तुमने उन्हें दान दे दिया ?

राजा वीरेंद्र ने झिझकते हुए कहा - उसने दान में राजकुमार गजेंद्र को मांगा है । मैं वचनबद्ध हूं । लेकिन आप दोनों की सहमति के बिना यह निर्णय लेने में अपने आप को असमर्थ पा रहा हूं । इसलिए मैं आप दोनों की राय इस विषय पर चाहता हूं ।

रानी मंजरी और राजमाता दोनों ही आश्चर्यचकित रह गए लेकिन वह एक ऐसी स्थिति थी जिसका निर्णय तो करना ही था .....

क्योंकि वचन भंग नहीं किया जा सकता था ....

वह भी जब वचन किसी राजा के द्वारा दिया गया हो तब तो बिल्कुल नहीं ...

कापालिक के द्वारा जिस प्रकार की मांग की गई थी वह सुनकर राजमाता और मंजरी दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा !

मंजरी फूट-फूट कर रोने लगी । कोई भी मां अपने बच्चे को अपने से दूर होता नहीं देख सकती चाहे वह राजरानी ही क्यों ना हो । राजमाता की आंखें आंसुओं से भर चुकी थी ।

गजेंद्र के लक्षण दोनों बचपन से ही देख रहे थे, उसकी हरकतें किसी राजकुमार के जैसे बिल्कुल नहीं थी .... यहां तक कि किसी सामान्य बच्चे के जैसे भी नहीं थी । इसलिए उनको कापालिक की बात में सच्चाई नजर आ रही थी....

फिर भी अपने हृदय के टुकड़े को किसी कापालिक को सौंप देना इतना आसान नहीं था !

राजमाता और मंजरी ने काफी सोच विचार के बाद  
अंततः हामी भर दी !

क्योंकि राज्य को संकट से बचाने की स्थिति में एक  
राजकुमार का बलिदान भी दिया जा सकता था यहाँ तो  
वह जीवित रहता .....

वैसे भी कहा जाता है कि...

जब परिवार की बात आए तो परिवार के सदस्य का  
त्याग किया जा सकता है !

जब ग्राम की बात आए तो परिवार का त्याग किया जा  
सकता है !

जब राज्य की बात आए तो ग्राम का त्याग किया जा  
सकता है !

और जब देश की बात आए तो राज्य का त्याग किया  
जा सकता है !

राजमाता और मंजरी ने उस कापालिक से एक बार  
मिलने की इच्छा जताई ।

राजा वीरेंद्र ने कापालिक से निवेदन किया कि वे दोनों  
आपसे मिलना चाहती है कापालिक ने सहमति दे दी ।

मंजरी राजमाता और राजा वीरेंद्र कापालिक से मिलने पहुंचे !

कापालिक को देखते ही मंजरी स्तब्ध रह गई !

यह तो वही कापालिक था जो उसे स्वप्न में दिखाई देता था !

उसने वह बात राजमाता को भी बताई थी ....

उसे इस प्रकार से आश्चर्यचकित होता देखकर राजमाता ने उससे पूछा ।

मंजरी ने बताया कि यह वही कापालिक है जो मुझे दिखाई देता है ।

अब संशय की कोई स्थिति नहीं थी और कापालिक के गजेन्द्र के साथ किसी प्रकार के पूर्व जन्म के संबंध की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता था ।

राजमाता और रानी मंजरी दोनों ने कापालिक को प्रणाम किया कापालिक ने हाथ उठाकर आशीर्वाद प्रदान किया ।

कापालिक बोला - मैं जानता हूँ कि एक माता के लिए अपने बच्चे से दूर रहना मुश्किल है । जगत कल्याण के लिए जन्म देने वाली आत्माओं को बहुत सारी प्रक्रियाओं से होकर गुजरना पड़ता है जोकि घर में रहकर संभव नहीं होता ।

एक उच्च कोटि की आत्मा इस बच्चे के शरीर में है उसकी शिक्षा-दीक्षा और आवश्यक आध्यात्मिक प्रक्रिया संपन्न करना जरूरी है ताकि वह आगे बढ़ कर उस कार्य को संपन्न कर सके जिसके लिए उसका जन्म हुआ है ।

राजमाता ने पूछा - क्या हम उसे मिल सकेंगे ?

कापालिक ने कहा - चिंता मत कर महारानी ! मैं पाँच साल के बाद उसे वापस कर दूंगा । उसके बाद उसे स्वयं आगे का मार्ग तलाश करना है । यह राज करने के लिए पैदा नहीं हुआ है । वह एक अत्यंत उच्च कोटि का सिद्ध है । वापस आने के बाद आप लोगों के साथ कितने समय रहेगा यह मैं नहीं कह सकता ।

यह बातें सुनकर उन्होंने सहमति में सिर हिलाया ।

बचपन से ही गजेंद्र की हरकतें सामान्य बच्चों से बिल्कुल अलग प्रकार की थी । वह सबसे दूर बैठा करता था । कई कई दिनों तक किसी से बात नहीं करता था । महल में बना हुआ शिव मंदिर उसका सबसे प्रिय स्थान था और वहां घंटों बैठा रहता !

सबसे अजीब बात थी कि कुत्ते उसे देखते ही उसके आस पास आकर बैठ जाते थे । यही नहीं जब वह चलता था तो उसके पीछे कुत्ते लाइन में एक सीध में ठीक उसी प्रकार चलते थे जैसे किसी टुकड़ी के कप्तान के पीछे सैनिक चलते हैं । यह सब देख कर राजमहल में सभी लोग आश्चर्य करते थे ....

वह बच्चा जरूर था लेकिन उसकी आंखों में इतना तेज था कि कोई उससे आंख मिलाकर बात नहीं कर पाता था । यहां तक कि स्वयं मंजरी और राजमाता भी उसकी आंखों में आंखें मिला कर बहुत देर देख नहीं पाते थे ।

जब जोरदार बारिश होती रहती तब वह आराम से पानी में भीगता हुआ घूमता रहता था ...

जब तेज धूप होती तो दोपहर में तपती धूप में नंगे पांव घूमता

इन सारी चीजों को देखकर घर वाले भी समझ चुके थे कि यह सामान्य बच्चा नहीं है । जबकि उसी के साथ पैदा हुए राजेंद्र की हरकतें बिल्कुल सामान्य बच्चों के जैसी थी ।

वीरेंद्र , राजमाता तथा मंजरी ने कापालिक को बच्चे को सौंपने का निर्णय स्वीकार कर लिया .....

गजेन्द्र को बुलवाया गया !

दासी गजेन्द्र को लेकर आई !

उस समय भी वह शिव मंदिर में ही बैठा हुआ था ।

कमरे में प्रवेश करने के बाद जैसे उसने कापालिक को देखा वह फूट-फूट कर रोने लगा और दौड़ कर उसके गले लग गया ।

कापालिक ने उसे अपनी गोद में उठा लिया ....

कमरे में अचानक धुवा भरने लगा ....

जब धुंवा छटा.....

तो कापालिक और गजेंद्र वहां से जा चुके थे ।

कापालिक सीरीज का पहला खंड "कापालिक चंडेश्वर"

यहां पर समाप्त होता है ।

इसके बाद की कथा अगले खंड "कापालिक चंडेश्वर

और पूर्णानंद" में पढ़ें ।